पञ्चमुखी हनुमान कवच 5 Headed Hanuman Armour-text

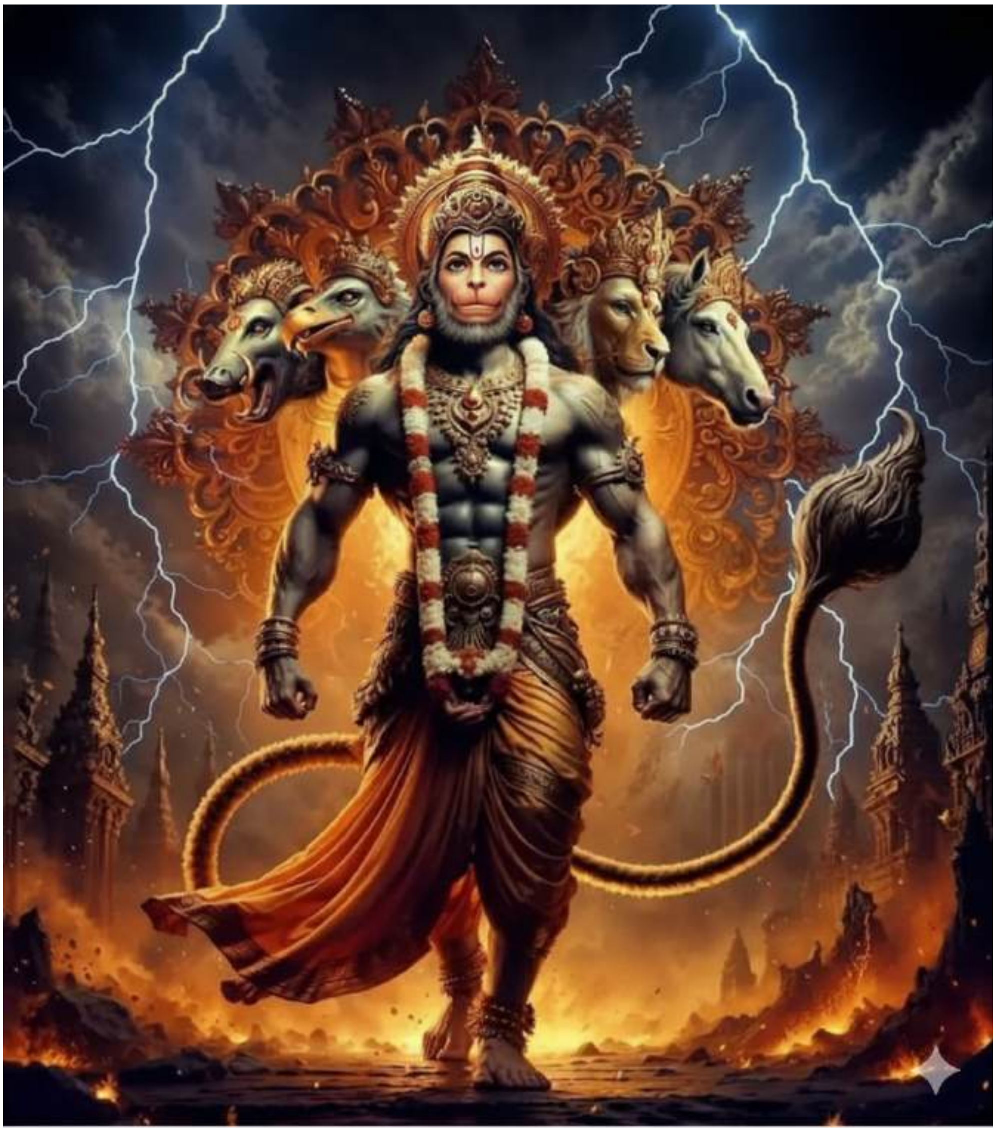

AI enhanced image. Original Instagram image courtesy - @artdrivensoul

ॐ श्री गणेशाय नमः | ॐ अस्य श्री पञ्चमुखहनुमत्कवचमन्त्रस्य | ब्रह्मा ऋषिः | गायत्री छन्दः | पञ्चमुखविराट् हनुमान् देवता |

ॐ (प्रणव - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप - मंत्र बोलने से पहले दिव्य शक्ति को जगाने के लिए) **श्री** (मंगलकारी, पूज्य) **गणेशाय** (श्री गणेश को) **नमः** (नमन | प्रणाम) = *Invoking the Supreme Lord by chanting* **ॐ**, *I offer my Salutations to the auspicious Lord Ganesha.*

ॐ अस्य (इस) **श्री** (पवित्र / दिव्य) **पञ्चमुख** (पाँच मुखों वाले) **हनुमत्** (हनुमान के) **कवच मन्त्रस्य** (मंत्र के...) = *Of this sacred text known as the Panchamukhi (Five-Headed) Hanuman Kavach (Kavach means Armour-text – text with Protection as the Priority)…*

ब्रह्मा (ब्रह्माजी) **ऋषिः** (ऋषि | मन्त्रद्रष्टा - जिनके द्वारा यह मंत्र प्रथम बार "देखा/प्राप्त" हुआ) = *Lord Brahmāa is the seer, i.e. first receiver of this text.*

गायत्री छन्दः (गायत्री छन्द - श्लोक की हर पंक्ति में २४ वर्ण, अर्थात पूरे अक्षर) = *The meter, (which defines how many complete vowels + consonants each line of the verse has) is Gāayatrī – 24 full letters*

पञ्चमुख (पाँच मुखों वाले) **विराट्** (विस्तृत | विराट रूपधारी) **हनुमान् देवता** (श्री हनुमान) = *The presiding deity of this text is 5 headed Lord Hanuman with a Grand presence.*

भावार्थ - शुरुआत शुभ होती है ॐ की ध्वनि से और श्री गणेश के नाम से, जैसी कि परंपरा है ☺
इसके बाद, प्राचीन भारतीय ग्रंथों में एक पद्धति है | मुख्य पाठ शुरू होने से पहले कुछ घोषणाएँ की जाती हैं |

सबसे पहले, पाठ का नाम बताया जाता है - **पंचमुखी (पाँच मुखों वाले) हनुमान कवच** |

फिर ऋषि का उल्लेख होता है - वे महापुरुष जिन्होंने इस ज्ञान को सबसे पहले दैवी चेतना से प्राप्त किया | हमारे पाठ में, ऋषि स्वयं **ब्रह्मा जी** हैं |

इसके बाद आता है छंद | छंद संस्कृत साहित्य की एक अनोखी परंपरा है। हर पंक्ति में एक समान संख्या के अक्षर होते हैं। इससे पाठ पढ़ना या गाना आसान और संतुलित हो जाता है | इससे रचना और काव्यात्मक भी बनती है - क्योंकि लेखक को शब्दों का चयन इस तरह करना होता है कि वाक्यों में समान अक्षर हों | हमारे पाठ में वैसे अधिकतर श्लोक अनुष्टुप छंद में हैं (8+8 = 16 पूरे अक्षर हर पंक्ति में - आधे अक्षर नहीं गिने जाते), परन्तु **मुख्य रक्षा का श्लोक** गायत्री छंद में है (24 पूरे अक्षर हर पंक्ति में) |

इसके बाद उन देवता का नाम घोषित किया जाता है, जो पूरे पाठ का केंद्र हैं, आधार हैं | हमारे पाठ में यह देवता हैं - **हमारे प्रिय हनुमानजी, विराट पंचमुखी स्वरूप में** |

ये सारी "घोषणाएँ" मन को केंद्रित करती हैं | जब हम पाठ शुरू करते हैं, तो ये हमें भीतर से तैयार करती हैं और मन एकाग्र होता जाता है |

Interpretation - *Auspicious Beginning with the Divine sound ॐ and Lord Ganesha's name, as always ☺*

Thereafter, as the tradition goes in Ancient Indian texts, there is a series of declarations in order before the main text starts.

First, the name of the text is declared - Panchamukhi (Five Headed) Hanuman Kavach (Armour-text).

Then, the Rishi (Seer) is acknowledged - the One who received it for the first time from the Divine Consciousness. In our case, the respected Seer is Lord Brahmaa Himself.

Then comes the Meter. The meter is a very interesting concept in Sanskrit texts. The total number of letters in EVERY line is the SAME! This brings ease & standardization when we recite the text. This constraint also enhances poetic beauty since the composer is forced to think of different words to fit the Meter. In our case, while most verses have the meter as Anushtup (8+8 = 16 letters in every line - half letters not counted), the ***core protection verse*** *has "Gayatri" Meter - 24 letters in each line.*

Then we announce the Deity who is central to the text. The focus, the foundation. In our case, it is our very own ***Lord Hanuman, BUT in his Grand Five Headed form.***

This "announcing and declaring" brings mental focus into the text as it is recited or studied further by us.

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @ ksailendu

ह्रीं बीजं | श्रीं शक्तिः | क्रौं कीलकं | क्रूं कवचं | क्रैं अस्त्राय फट् | इति दिग्बन्धः |
Hreem Beejam | Shreem Shaktih | Kraum Keelakam | Kroom Kavacham | Kraim Astraaya Phatt | Iti Digbandhah |

इन शब्दों में कुछ महत्वपूर्ण तकनीकी बातें समझने जैसी हैं | **ध्यान से पढ़ें.**
These words have some crucial technical elements, and it is important to understand them. ***Please read carefully.***

ह्रीं, श्रीं, क्रौं, क्रूं, क्रैं - ये पाँचों **बीज मंत्र** हैं | बीज मंत्र एक विचारपूर्वक रखा हुआ शब्द होता है | इस शब्द का भाषा के अनुसार अर्थ नहीं होता | इसका उद्देश्य एक ध्वनि तरंग उत्पन्न करना होता है | अलग अलग बीज मन्त्रों की ध्वनियाँ अलग अलग काम करती हैं, जो हम एक एक कर के समझेंगे | पहले हम **ह्रीं और श्रीं** को समझेंगे - ये बीज मंत्र हमें **आतंरिक** रूप से कवच पढ़ने के लिए तैयार करने का काम कर रहे हैं | उसके बाद हम **क्रौं, क्रूं, क्रैं** को समझेंगे | ये तीनों एक **बाहरी** ढांचा बना रहे हैं, कवच से उत्पन्न होने वाली शक्ति के सही प्रयोग के लिए | इस तरह, ये पाँचों बीज मंत्र मिल के **अंदर और बाहर** से हमें तैयार कर रहे हैं | इसीलिये इन्हें कवच के पहले लिखा गया है |

ह्रीं को सबसे पहले लिखा है, और बीज कहा गया है, क्योंकि इन पाँचों बीज मन्त्रों में भी ह्रीं **प्रमुख** बीज मंत्र है | आगे आने वाले कवच के उपयोग के लिए जो ऊर्जा हमें चाहिए, ह्रीं की ध्वनि उस ऊर्जा को हमारे अंदर जगाती है | ह्रीं की ध्वनि इस ऊर्जा के साथ - साथ शुद्धता और एकाग्रता को भी जागृत करती है | आइये समझें यह कैसे होता है…

Hreem, Shreem, Kraum, Kroom, and Kraim *are "****Beej mantras****". A Beej mantra is a specific word with no literal meaning - meant to create a sound vibration. Different Beej mantras create different effects. We will understand them 1 by 1. First, we will understand* ***Hreem*** *and* ***Shreem****. These Beej mantras prepare us* ***internally*** *to recite the Armour-text. After this, we will understand* ***Kraum, Kroom, and Kraim****. These three create an* ***outer structure****. This structure helps in the correct use of the energy generated by the Armour-text. In this way, these 5* ***together*** *prepare us* ***from inside and outside****. That is why they are written* ***before*** *the Armour-text.*

Hreem is written first and is called the ***Beej*** *(Beej means seed). This is because Hreem is the* ***primary Beej mantra*** *amongst the five. For the use of the Armour-text that follows, we need a certain type of inner energy. The sound of Hreem awakens this energy within us. The sound of Hreem also awakens purity and focus, along with inner strength. Let us now understand how this happens…*

ह्रीं (Hreeṁ)
ध्वनियों का अर्थ ***(Sound-by-sound meaning)***

ह्रीं = H – R – EE – Ṁ (ह् + र् + ई + ं)

ह् - प्राण और विस्तार का सूचक है | यह भारीपन और सुस्ती को हटाता है | चेतना में गति लाता है | सुप्त आंतरिक ऊर्जा को जागृत करता है | साधक को ग्रहणशील बनाता है |

H *- represents life force and expansion. It opens the system by removing inner heaviness. It brings movement by awakening dormant inner energy. It makes the person's system receptive.*

र् - अग्नि तत्व का प्रतीक है | यह भय, भ्रम, अशुद्धि और मानसिक अव्यवस्था को जलाता है | इच्छाशक्ति और स्पष्टता बढ़ाता है | मानसिक और भावनात्मक अव्यवस्था को नष्ट कर के हमें अंदर से शुद्ध करता है |

R - *represents (inner) fire. It burns impurities, confusion, fears, and emotional residue. It sharpens awareness and will. It purifies the inner field by burning mental and emotional clutter.*

ई (दीर्घ स्वर) - शक्ति के प्रवाह को दर्शाता है | यह चेतना को एकाग्र करता है | यह **ह्** और **र्** से जागी हुई ऊर्जा को स्थिर और केंद्रित बनाता है, जिससे विचार शुद्ध होते हैं और ऊर्जा, बुद्धि से जुड़ जाती है |

EE - *is energy in motion. It stabilizes awareness. It converts energy produced by H and R into directed inner focus which refines thoughts. This connects energy to intelligence.*

ं (अनुनासिक बिंदु) - अब तक जो निर्मित हुआ है, उसे समेटने और साथ बांधने का काम करता है | यह अभी तक बनी ऊर्जा को भीतर और ऊपर खींचता है | जागी हुई शुद्ध और केंद्रित ऊर्जा को हमारे भीतर स्थिर करता है |

Ṁ - *is integration and sealing. It pulls the energy produced till now inward and upward. It locks the purified, focused energy within us, so that it stays with us for use.*

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @artdrivensoul

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @artdrivensoul

श्रीं शक्तिः – ऊर्जा को सही दिशा मिलने पर ही वह शक्ति बनती है | ह्रीं शब्द से जो ऊर्जा हमारे अंदर जागी है, श्रीं उस ऊर्जा को दिशा देता है | यहाँ भी श्रीं शब्द से जुड़ी ध्वनि तरंगों से ही यह उद्देश्य प्राप्त होता है | श्रीं की ध्वनि इस शक्ति को स्थिर करती है, ताकि वह हमारे अंदर सही तरह से कार्य कर सके | यह ध्वनि विस्तार और पोषण भी लाती है | आइये समझें यह कैसे होता है...

Shreem as strength *– Energy, only when given direction, becomes strength. The energy awakened within us by the sound Hreem is given direction by Shreem. Again, the vibrations of the sound "Shreem" are used. This sound stabilizes the energy, allowing it to function properly within us. This sound also brings expansion and nourishment. Let us understand how…*

श्रीं (Shreeṁ)
ध्वनियों का अर्थ ***(Sound-by-sound meaning)***

श्रीं = Sh – R – EE – Ṁ (श् + र् + ई + ं)

श् - शांति, सौम्यता और शुभता का प्रतीक है | यह ऊर्जा के बहाव को कोमल बनाता है | ऊर्जा को ग्रहणशील बनाता है | ऊर्जा के विस्तार के लिए सुरक्षित और सौम्य आधार बनाता है |

Śh *- pronounced softly, this sound brings calmness and auspiciousness. It softens the energetic field, removes friction, creating a gentle, nourishing base for energy to expand safely.*

र् - यहाँ भी अग्नि है, लेकिन जलाने वाले रूप में नहीं, बल्कि संतुलित रूप में | यहाँ यह ऊर्जा को फैलाता और वितरित करता है | असंतुलन नहीं होने देता | इससे शक्ति का विस्तार स्थिरता से होता है |

R *- is Fire here as well, but here its function is regulating, not burning. It circulates energy properly and brings vitality in us. It makes sure energy expands in a stable way.*

ई - यहाँ स्थायित्व का काम करता है | ऐसा मंत्र प्रयोग जो थोड़ी देर के लिए बहुत सारे ऊर्जा दे दे, लेकिन कुछ समय बाद वह ऊर्जा कम होती चली जाए, कवच के लिए उचित नहीं है | कवच पढ़ने से बनी शक्ति ने **लगातार** हमें सुरक्षा देनी चाहिए | इसके लिए ऊर्जा का स्थायी होना आवश्यक है |

EE - *provides continuity here. A Mantra which gives us high energy, but only for a limited time window, is not best suited for being an Armour-text. An Armour needs to protect us* ***constantly****. For this, the energy needs to be there continuously.*

ं (अनुनासिक बिंदु) - यहाँ पर भी ऊर्जा को समेटने, और बोलचाल की भाषा में कहें तो "सील" करने का काम करता है | कवच पढ़ते हुए किसी भी समय ऊर्जा बिखर न जाए, ये ं का काम है |

Ṁ - *carries out the role of integration and sealing here as well. It makes sure that anytime throughout the recital of the Armour-text, the energy doesn't dissipate.*

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @coloredvish

क्रौं कीलकं, क्रूं कवचं, क्रैं अस्त्राय फट् - ह्रीं और **श्रीं** ने हमें **अंदर** से तैयार कर दिया है | अब कवच-पाठ से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा को **बाहरी दिशा** देने के लिए हमें एक ढाँचे की आवश्यकता है | यह कार्य हम **क्रौं, क्रूं और क्रैं** के द्वारा करेंगे | पढ़ने के साथ साथ चित्र भी देखिएगा |

क्रौं को **कीलक** कहा गया है | कीलक का सामान्य अर्थ होता है "आधार" | टेंट लगाने के लिए ज़मीन में गाड़ा हुआ मोटा कीला हम सबने देखा है - ऐसा समझिये ये शब्द उसी वस्तु को सोच के लिया हुआ है | आध्यात्मिक कवच के संदर्भ में इसका अर्थ यह है कि हम अपने शरीर को स्थिर रखते हुए ऊर्जा का रक्षात्मक घेरा शरीर से **बाहर की ओर** बना रहे हैं | ताकि वह हमारी ओर बढ़ रहे ऊर्जात्मक खतरों या हमलों का **हम तक पहुंचने से पहले** ही सामना कर सके | दूसरे शब्दों में, यहाँ ऊर्जा प्रवाह की **दिशा** निर्धारित की जा रही है |

क्रूं को अलग से **कवच** कहा गया है | ऊर्जा का जो रक्षात्मक घेरा हमने क्रौं कीलक से बनाया है, ये उसे एक मज़बूत ढाल का स्वरुप दे देता है | हमें इस ढाल के अंदर रख के कवच अपना काम करता है, ताकि किसी भी हालत में हम सुरक्षित रहें |

क्रैं कवच की **प्रहार शक्ति** से जुड़ा हुआ है | क्रैं के माध्यम से हम यह संकल्प घोषित करते हैं कि हमारी ओर आने वाले किसी भी खतरे या हमले पर ऊर्जा का **सटीक और शक्तिशाली प्रहार** किया जाएगा | यह ऊर्जा वही ऊर्जा है जो यह कवच निर्मित करेगा | इसलिए क्रैं के साथ हम **"अस्त्राय फट्"** कह रहे हैं, जहाँ अस्त्र मतलब हथियार और फट् मतलब "अभी" | ये एक निर्देश है – "इस कवच के द्वारा, हमें बचाने के साथ - साथ, आने वाले खतरे पर अस्त्र प्रहार भी **तत्काल** किया जाएगा" |

क्रौं कीलकं – ***KRAUṀ as Anchor***

क्रूं कवचं – ***KROOṀ as Shield***

क्रैं अस्त्राय फट् – ***KRAIṀ as Strike NOW***

Kraum Keelakam | Kroom Kavacham | Kraim Astraaya Phat - Hreem *and* ***Shreem*** *have prepared us* ***internally****. We now need to give* ***external*** *direction to the energy. This is done by using* ***Kraum, Kroom and Kraim****. Please refer to the diagrams as you read.*

Kraum *is declared as the "Keelak". Keelak by definition means an anchor. All of us have seen that large, iron nail like structure hammered into the ground before we tie a tent – that is "Keelak". For a spiritual Armour-text, it indicates that we want to keep our body as the anchor, and we want the energy field to get created* ***around*** *our body. This is so that the energy field counters the energetic threats moving towards us, BEFORE they reach us. In brief, we are declaring the* ***direction*** *of the energy movement here.*

Kroom *is called out as "Kavach" i.e. Armour separately. The energetic field that we have created around us using Kraum is turned into a protective shield using Kroom. The Armour-text intends to keep us safe within this shield as it counters the incoming threats.*

Kraim *is specifically linked to strike capabilities of the Armour-text. With Kraim, we are giving an activating instruction - any threat coming towards us will be struck down with a strong and precise shot of energy. This is the energy which this Armour-text will generate. This is why with Kraim, we are saying "Astraay – Phat". "Astraay" refers to weapons and "Phat" means "NOW"!*

आइये, अब **क्रौं, क्रूं** और **क्रैं** की ध्वनियों का अर्थ समझते हैं. *Let us now understand the Sound – by – Sound meaning of* ***Kraum, Kroom and Kraim.***

क्रौं कीलकं (Krauṁ - Anchor)
ध्वनियों का अर्थ ***(Sound-by-sound meaning)***

क्रौं = K – R – AU - Ṁ (क् + र् + औ + ं)

क् – क्रिया, बल और ढाँचे का संकेत | ऊर्जा को बाहर की दिशा देता है | मज़बूती और निर्णय लेने की शक्ति पैदा करता है |

K *- Represents action, force, and structure. It initiates outward movement. Brings firmness and decisiveness.*

र् - यहाँ गति और दिशा देने का काम कर रहा है | ऊर्जा को केंद्र से बाहर की ओर ले जाता है | ऊर्जा को रुकने से या अंदर की तरफ मुड़ने से रोकता है |

R *– Here, gives direction & propulsion. Carries energy away from the center. Stops stagnation or inward collapse of energy.*

औ - विस्तार पैदा करता है | ऊर्जा को शरीर से बाहर फैलाता है | हमारे शरीर से कुछ दूरी पर ऊर्जा का एक गोल घेरा पैदा करता है |

AU *– Creates expansion. Pushes energy outward into space. Creates a circular boundary around us with the energy.*

ं (अनुनासिक बिंदु) - जो ऊर्जा का गोल घेरा हमने बनाया है, उसे मज़बूती से स्थिर करता है | ऊर्जा को अपने स्थान पर बनाये रखता है, बिखरने नहीं देता |

Ṁ *- Here, it seals the circular boundary of energy we have projected. Prevents dispersion or leakage of the energy.*

क्रूं कवचं (Kroom̐ - Shield)

ध्वनियों का अर्थ ***(Sound-by-sound meaning)*** **क्रूं = K – R – OO - Ṁ (क् + र् + ऊ + ं)**

क्, र् और ं का काम वही है जो क्रौं में था | यहाँ अंतर है **ऊ** का | ऐसा समझिये कि ऊ, क्रौं से बनाये हुए घेरे को मोटाई दे के उसे कवच जैसा बना देता है |

K, R and Ṁ perform the same function as KRAUM. The difference here is "Oo". Oo gives thickness to the circular energetic boundary created by KRAUM, turning it into a shield.

क्रैं अस्त्राय फट् (Kraim - Strike NOW!)

ध्वनियों का अर्थ ***(Sound-by-sound meaning)*** **क्रैं = K – R – AI - Ṁ (क् + र् + ऐ + ं)**

क् – प्रहार की शक्ति को सक्रिय करता है |

र् - ऊर्जा को सही दिशा देता है | ऊर्जा केंद्रित रहती है, बिखरती नहीं |

ऐ - प्रहार में तीक्ष्णता और एकाग्रता लाता है | ऊर्जा सही जगह पर केंद्रित हो के निर्णायक प्रहार करती है |

ं **(अनुनासिक बिंदु) -** प्रहार को पूर्ण करता है | ऊर्जा को वापस लौटने से, और प्रहार के बाद दिशाहीन हो के हमारे अंदर बेचैनी पैदा करने से, रोकता है |

K *– Initiates strike ready force. Prepares energy for action.*

R – *Directs energy precisely. Prevents scattered discharge.*

AI – *Gives sharpness and penetration. Focuses energy on a point. Enables decisive strike.*

Ṁ – *Completes the action. Prevents rebound of energy or residual agitation of energy after the strike is done.*

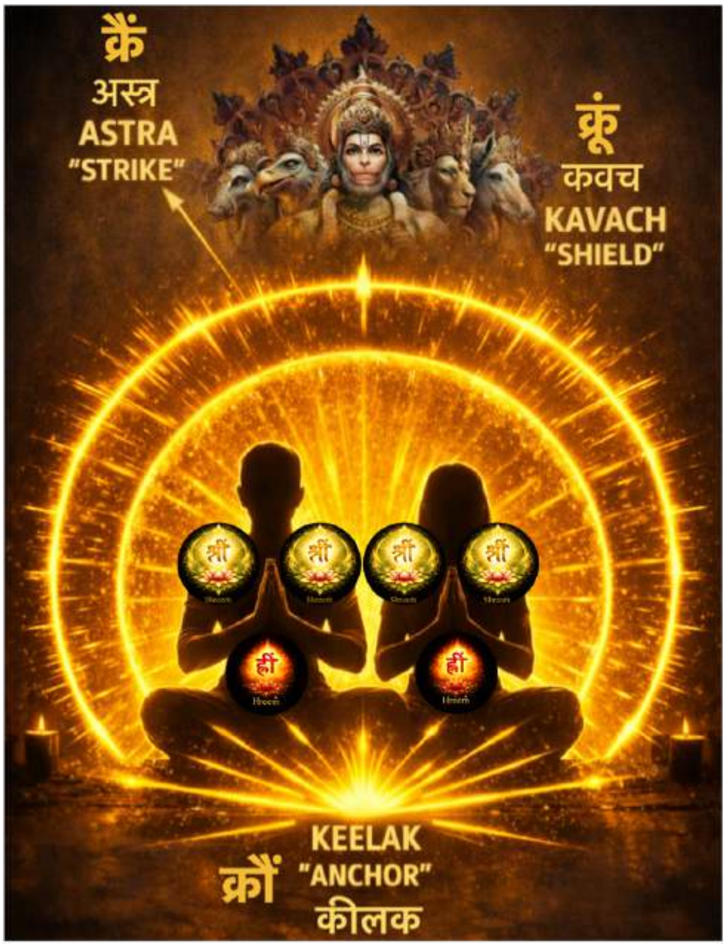

इति दिग्बन्धः - और इस प्रकार पूरा हुआ दिग्बन्ध | दिग्बन्ध का अर्थ है सभी दिशाओं में ऊर्जा को बाँध कर स्थिर कर देना | यह सुनिश्चित करता है कि कवच द्वारा बनाई गई सुरक्षा हर दिशा में अटूट बनी रहे | हमने अभी तक जो पढ़ा, उससे हमारी आतंरिक तैयारी और बाहरी ढाँचे का निर्माण, दोनों पूरे हुए - यही है दिग्बंध | अब हम कवच के पाठ में उतरेंगे | सुविधा के लिए पहली दो पंक्तियाँ वापस पढ़ के फिर कवच शुरू करेंगे ...

Iti Digbandhah **-** *With this, we have built the "DIGBANDH" (literal meaning – tying together from all directions). Practical meaning - structuring and stabilizing energy from all directions. Making sure the energy structure remains firm. With all that we have studied till now, our internal preparation and external structure are both in place now – this is what is meant by "Digbandh". We will now dive into the Armour-text's reading. For revision, we will read the first 2 lines again and then go into the text's body.*

ॐ श्री गणेशाय नमः | ॐ अस्य श्री पञ्चमुखहनुमत्कवचमन्त्रस्य | ब्रह्मा ऋषिः | गायत्री छन्दः | पञ्चमुखविराट् हनुमान् देवता | ह्रीं बीजं | श्रीं शक्तिः | क्रौं कीलकं | क्रूं कवचं | क्रैं अस्त्राय फट् | इति दिग्बन्धः |

इन दो पंक्तियों के साथ कवच की बुनियाद पक्की हुई | अब आगे बढ़ते हैं |
The foundation of the Armour-text is in place with these two lines. Let us now move forward.

|| श्री गरुड़ उवाच ||

श्री गरुड़, श्री विष्णु के हमेशा के साथी, कह रहे हैं... = *Lord Garuda, the eternal companion of Shri Vishnu, says ...*

भावार्थ - ये तीन शब्द महत्त्वपूर्ण हैं | देखिये कैसे विष्णु लोक में घटी एक घटना हमारे लिए कवच बन गयी | श्री गरुड़ और श्री विष्णु दोनों दिव्य स्वरुप हैं, जो सदा साथ रहते हैं | उनके इस साथ को वार्तालाप के माध्यम से हमारे ग्रंथों में दर्शाया जाता है | यह कवच ऐसा ही एक वार्तालाप है, जहाँ गरुड़ देव विष्णु जी को एक स्तोत्र सुना रहे हैं | श्री ब्रह्मा ने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से यह वार्तालाप सुना/देखा और शब्दों में डाला, जो इस कवच के रूप में हमारे सामने है |

Interpretation – *This simple sentence is very important. See how an event that happened in the Vishnu - realm has become an armour-text for us. Lord Garuda & Lord Vishnu are celestial beings & constant companions. This companionship is often shown in our scriptures through dialogue. This whole armour-text is one such dialogue, where Lord Garuda is sharing a text with Lord Vishnu. Lord Brahmaa captured this dialogue through his spiritual powers and put it into words - now available to us as this Armour-text.*

**अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वांगसुंदर |
यत्कृतं देवदेवेन ध्यानं हनुमतः प्रियम् || 1 ||**

अथ (अब) | **ध्यानं** (ध्यान की विधि (तरीके) को) | **प्रवक्ष्यामि** (मैं विस्तार से बताने जा रहा हूँ) | **शृणु** (सुनिए) | **सर्वांगसुंदर** (हे सम्पूर्ण रूप से सुंदर [भगवान विष्णु]) = *Now, I am about to explain the meditation process; please listen, O One beautiful in every aspect (i.e. Lord Vishnu).*

यत्कृतं (जो रचा गया है) | **देवदेवेन** (देवों के देव महादेव द्वारा) | **ध्यानं** (वह ध्यान विधि) | **हनुमतः प्रियम्** (जो श्री हनुमान को अत्यंत प्रिय है) = *The meditation process which has been created by Lord of the Gods, Mahadeva (Shiva), and which is very dear to Lord Hanuman.*

भावार्थ - यहाँ गरुड़ देव कहते हैं कि अब वे उस **ध्यान की विधि** का वर्णन करने जा रहे हैं, जिसे कवच से पहले पढ़ना आवश्यक है | वे भगवान विष्णु को प्रत्यक्ष संबोधित करते हुए उनसे सुनने का अनुरोध करते हैं | ध्यान देने वाली बात है कि यहाँ एक ध्यान की विधि, एक प्रक्रिया बताई जा रही है | इस ध्यान की विधि को कर के कवच पढ़ने से कवच बेहतर तरीके से काम कर सकेगा | यह इस पहले श्लोक का महत्व है |

दूसरी पंक्ति में इस ध्यान की विधि को **देवों के देव महादेव द्वारा रचा** बताया गया है | यह बात विशेष रूप से अर्थपूर्ण है, क्योंकि श्री हनुमान स्वयं **रुद्र** के अवतार माने जाते हैं | इसलिए, यह ध्यान की विधि श्री हनुमान को अत्यंत प्रिय है | इस विधि को कर के हम श्री हनुमान के स्वरूप से और गहरे से जुड़ते चले जाते हैं | यह जुड़ाव कवच को प्रभावी बनाने में सहायता करता है | ध्यान देने योग्य बात यह है कि कवच का आधार बल नहीं, श्री हनुमान से गहरा जुड़ाव है |

Interpretation - *Lord Garuda directly addresses Lord Vishnu here, declaring that He is about to elaborate on a Meditation process. A process which is desirable to be done before we go further into the Armour-text. This is the importance of this first Verse.*

In the second line, this meditation process is said to be ***created by Lord of the Gods - here understood as Mahadev (Shiv)****. This aligns naturally with Lord Hanuman's identity as being born out of the same element as Mahadev (Rudra element). Hence, a meditation process given by Mahadev being dear to Lord Hanuman is structurally coherent. Doing this process connects us with Lord Hanuman one degree deeper, which in turn makes the recital of this Armour-text even more effective. It is noteworthy that the basis of Protection is not force. Basis of protection is a deep connection with Lord Hanuman.*

पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्चनयनैर्युतम् |
बाहुभिर्दशभिर्युक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम् || 2 ||

पञ्च (पंच) वक्त्रं (पाँच मुखों वाले) | **महाभीमं** (अत्यन्त भयानक, प्रचण्ड) | **त्रिपञ्चनयनैर्युतम् - त्रिपञ्चनयनैः** (पंद्रह नेत्रों से (हर मुख के साथ तीन)) + **युतम्** (युक्त, सम्पन्न) | **बाहुभिर्दशभिर्युक्तं - बाहुभिः** (भुजाओं से) + **दशभिः** (दस) + **युक्तं** (युक्त, सम्पन्न) | **सर्वकामार्थसिद्धिदम् - सर्व + काम + अर्थ + सिद्धिदम्** (सभी कामनाओं और उद्देश्यों की सिद्धि देने वाले) = *(The form is) Endowed with five faces, immensely terrifying and powerful, possessing fifteen eyes (3 eyes with every face), ten arms, capable of granting the fulfilment of all (justified) aims & ambitions.*

AI enhanced image.
Original Pinterest image courtesy - @kishoreasam9

यह श्लोक उस ध्यान की प्रक्रिया को स्थापित कर रहा है, जिसकी हमने पिछले श्लोक में बात की थी | इसमें उस **स्वरूप को स्थापित किया जा रहा है**, जिसके माध्यम से आगे चलकर संरक्षण कार्य करेगा | पाँच मुख सभी दिशाओं में जागरूकता का संकेत देते हैं | पंद्रह नेत्र यह दर्शाते हैं कि कोई भी दिशा या स्थिति इस स्वरूप की दृष्टि से बाहर नहीं है (यह ध्यान रहे, तीसरा नेत्र आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक होता है) | दस भुजाएँ यह बताती हैं कि यह स्वरूप एक साथ अनेक स्तरों पर कार्य करने में सक्षम है | उन्हें *महाभीम* कहा गया है - हमारे शत्रु में भय उत्पन्न करना संरक्षण के लिए उपयुक्त है | *सर्वकामार्थसिद्धिदम्* का अर्थ है ऐसा स्वरूप जो सभी उचित उद्देश्यों की सिद्धि देने में समर्थ है | यह बात **महत्त्वपूर्ण** है | सुरक्षा, इस स्तोत्र का **पहला** फायदा है | और भी कई फायदे हैं |

एक मूल प्रश्न - ये पाँच मुख वास्तव में क्या हैं ? हर मुख एक **प्रतीक** है, संरक्षण के अलग अलग सिद्धांतों का, तरीकों का (हम सिद्धांत + तरीके को "**तत्त्व**" कहेंगे) | प्रत्येक तत्त्व, हम पर आये संकट या आवश्यकता के प्रति प्रभु की एक विशिष्ट **प्रतिक्रिया** है | और ये सभी तत्त्व एक ही स्वरुप - हनुमान जी - के माध्यम से उपयोग में लाये जा सकते हैं, अगर इस स्तोत्र का ज्ञान हो तो |

*This verse is giving shape to the meditation process mentioned in the 1^{st} verse. It establishes the **form** through which protection will **later** operate. The 5 faces represent multi-directional awareness. The 15 eyes indicate continuous perception**,** leaving no direction unseen (It is worth noting that 3^{rd} eye refers to the spiritual eye). 10 arms signify readiness for action across multiple levels. The form is terrifying - not for us - for entities threatening us. Suitable for protection! This form enables support to ALL ambitions. This is **important**. Protection is just ONE benefit of the text. Many others follow.*

*A fundamental question – what ARE these 5 faces? Each face is a symbol – a **principle**, showing different **ways** or **methods** of protection. Each principle represents a distinct **mode** of divine response to threat and need, accessible through One Entity - Lord Hanuman, given this text is known to us.*

पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम् |
दंष्ट्राकरालवदनं भ्रुकुटिकुटिलेक्षणम् || 3 ||

पूर्वं (पूर्व दिशा में) | **तु** (तो) | **वानरं** (वानर रूप) | **वक्त्रं** (मुख) | **कोटिसूर्यसमप्रभम् - कोटि - सूर्य** (करोड़ों सूर्यों) **+ सम - प्रभम्** (के समान तेजस्वी) | **दंष्ट्राकरालवदनं - दंष्ट्रा** (दाढ़ें) + **कराल** (भयानक) + **वदनं** (मुख) | **भ्रुकुटि** (भौंहें) | **कुटिलेक्षणम् - कुटिल** (टेढ़ी, तनी हुई) + **ईक्षणम्** (दृष्टि) = *The Vāanara (Divine monkey) face is towards the East, shining with the radiance of tens of millions of Suns. This face is terrifying (especially) because of the large, sharp and protruding fangs. The gaze is sharp and intensely focused, evident by the concentrated eyebrows.*

यह श्लोक, ध्यान को दिशाओं पर आधारित ढांचा देने की शुरुआत है | वानर तत्त्व को **पूर्व** में रखा गया है - उदय, प्रकाश और प्रथम संपर्क की दिशा | इस दिशा में वानर तत्त्व को रखने का अर्थ है कि आने वाले किसी भी खतरे पर **पहली प्रतिक्रिया** इस मुख से आएगी | *कोटिसूर्यसमप्रभम्* केवल प्रकाश नहीं, बल्कि ऐसा तेज है जो दृष्टि पर पूर्ण अधिकार स्थापित कर लेता है | इस तेज के कारण कोई भी खतरा पकड़ में आये बिना आगे नहीं बढ़ सकता | इस तरीके का उद्देश्य यह है कि जहाँ तक हो सके, तेज़ गति से काम कर के खतरे को **बड़ा बनने से पहले ही** रोक दिया जाए | हमें अपने प्यारे हनुमान जी को ऐसे भयानक रूप में देखने की आदत नहीं है, इसलिए उन्हें ऐसा देखना थोड़ा अजीब लग सकता है | लेकिन, हमें याद रहे, हर मुख एक **तत्त्व**, एक प्रतिक्रिया को दिखाने का **माध्यम** है | यह बात सभी मुखों के लिए ध्यान रखने योग्य है |

*This verse begins the directional structure of the Meditation. The Divine Monkey principle is placed towards the East - the direction of emergence, illumination, and first contact. This makes it the primary point of encounter with any incoming threat or attack. The phrase "tens of millions of Suns" conveys overwhelming radiance - no threat can approach unseen. This principle is aimed at intercepting threats the moment they arise, and as far as possible, using speed of action to **proactively** diffuse the threat **before** it becomes serious. Lord's terrifying look may make us a bit uneasy - we are not used to seeing our beloved Lord Hanuman this way. However, let us remember, each face **symbolizes a principle**, a **method** of responding. This thought should be applied to all 5 faces.*

वानर मुख
पूर्व दिशा की ओर

Divine Monkey
East Facing

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @kishoreasam9

अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् |
अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् || 4 ||

अस्यैव (इस मुख के, अर्थात पूर्व मुख के) | **दक्षिणम्** (दाहिनी ओर स्थित - पूर्व से दाएं मुड़ेंगे तो दक्षिण दिशा आ जायेगी) | **वक्त्रम्** (मुख) | **नारसिंहम्** (नारायण के सिंह-स्वरूप, केवल सिंह-मानव नहीं) | **महा–अद्-भुतम्** (अत्यन्त अद्भुत, आश्चर्यजनक) | **अत्युग्रतेजोवपुषं – अति + उग्र + तेजः + वपुषम्** (वपुषम् अर्थात् शरीर या स्वरूप. मिल के अर्थ - अत्यन्त उग्र और प्रचण्ड तेज से युक्त स्वरूप) | **भीषणम्** (जिन्हें देख के (हमारे शत्रु में) भय उत्पन्न हो) | **भय–नाशनम्** ((हमारे) भय का मूल से नाश करने वाले) = *To the right of this (East facing Divine Monkey) face is the (South facing) Nāarasiṁha face - the Lion form of Lord Nāarāayaṇa. Astonishing in nature, blazing with extreme intensity, terrifying (for our enemies) - meant to destroy (our) Fear.*

यहाँ **नारसिंह** शब्द का मूल अर्थ **नरसिंह** तो है ही, लेकिन एक अर्थ और भी है | वो अर्थ ये कि यह स्वयं प्रभु **नारायण का सिंह तत्त्व** है जो पंचमुखी हनुमान के माध्यम से प्रकट हो रहा है | **"नार"** शब्द का प्रयोग **सिंह** की उग्रता को अस्तित्व के मूल - **नारायण (नार + आयण)** से जोड़ रहा है | अर्थात्, यह तत्त्व स्वयं परम तत्त्व से निकला है | यहाँ ये ध्यान देना आवश्यक है कि हनुमान एक शक्ति के रुप में अनंत काल से उपस्थित रहे हैं | उनका भौतिक हनुमान अवतार त्रेता युग में श्री राम के साथ हुआ, लेकिन वो एक शक्ति के रुप में उसके कहीं पहले से स्थापित रहे ही होंगे | उसी तरह, प्रभु नारायण का भौतिक नरसिंह अवतार सत्य युग में हुआ, लेकिन उनकी सिंह रूपी शक्ति अनंत काल से स्थापित रही ही होगी |

इस मुख को **सीधे हाथ** की ओर स्थापित किया गया है - **सक्रिय** रक्षा का प्रतीक | यह तत्त्व उन खतरों पर कार्य करता है **जो आमने सामने का टकराव** माँगते हैं - सामने से आने वाला शत्रु, दमनकारी शक्तियाँ या जान-बूझकर किया गया अन्याय | ऐसे खतरे जो आक्रामक और हिंसक हैं, तथा नियंत्रण से बाहर हो चुके हैं | इसलिए भीषण और भयनाशन का विरोधाभास जानबूझ कर रखा गया है - यह बताने के लिए कि ऐसे खतरों का का नाश उनसे भी कहीं अधिक प्रबल शक्ति द्वारा ही संभव है |

The use of the word Nāarasiṁha here is very deliberate and meaningful. It means the man-lion incarnation of Lord Vishnu, and more. It indicates the "Lion like" element of Lord Nāarāayaṇa Himself, manifesting through Panchamukhi Hanuman. The word Nāara links this Lion like ferocity to - Nāarāayaṇa (Nāara + āayaṇa) - the very ground of existence. An indication that this principle arises from the Supreme Source itself. Here, is it noteworthy that Lord Hanuman has eternally existed as a divine Entity, even though His physical incarnation appeared in the Tretaā Yuga with Lord Rāama. Similarly, Lord Nāarāyaṇa's Narasimha incarnation came in the Satya Yuga, but His lion-element must have existed eternally.

*This face is placed at the **right** side of the central, eastern face, symbolizing **active** protection ("right hand"). This principle works on threats requiring DIRECT confrontation - an enemy out in the open, dominating forces or deliberate injustice. Essentially, threats which are aggressive, violent and out of control - past the tolerance limits. Hence, a deliberate contrast between "being terrifying" and "destroying fear" is brought out - to show that such threats can only be removed by a power way greater than them.*

← गरुड़ मुख - पश्चिम
Divine Eagle - West

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @mosurkeli

नारसिंह मुख
दक्षिण दिशा की ओर

Divine Lion South Facing

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @Majhiramakanta

वानर मुख - पूर्व →
Divine Monkey - East

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @kishoreasam9

पश्चिमं गारुड़ं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् |
सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् || 5 ||

पश्चिमम् (पश्चिम दिशा में स्थित) | **गारुड़म्** (गरुड़ स्वरूप वाला) | **वक्त्रम्** (मुख) | **वक्र–तुण्डम्** (वक्र अर्थात् मुड़ी हुई चोंच वाला) | **महा–बलम्** (अत्यन्त महान बल से युक्त) | **सर्व–नाग–प्रशमनम्** (सभी नकारात्मक नाग शक्तियों को शांत करने वाला) | **विषभूतादिकृन्तनम्** – **विष** + **भूत** + **आदि** + **कृन्तनम्** (विष और भूत बाधा को काट देने वाला) = *To the West is the Garuḍa (Mighty Divine Eagle) face, with a curved beak and immense strength. He is capable of pacifying all kinds of detrimental serpentine forces. He surgically removes poisons and spirit related influences.*

इस श्लोक में गरुड़ तत्त्व को पंचमुखी हनुमान के पश्चिम मुख में स्थापित किया गया है | गरुड़ तत्त्व बलशाली होने के साथ साथ सूक्ष्म और सटीक तरीके से काम करता है | सामान्यतः गरुड़ को विष-नाशक के रूप में जाना जाता है, लेकिन यहाँ विष के साथ भूत- प्रेत जैसी सूक्ष्म बाधाओं को भी जोड़ा गया है | इसका कारण यह है कि विष और भूत – प्रेत, दोनों ही अनजाने में प्रवेश करके, बिना सामने आये जीवन-ऊर्जा को क्षीण करते हैं | जहाँ उनका स्थान नहीं है, वहाँ टिके रह कर नुक्सान करते हैं | इसीलिए **कृन्तनम्** शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है | इसका अर्थ नाश करना नहीं, बल्कि अस्वाभाविक बंधनों को सफाई से **काट देना** है | गरुड़ तत्त्व विष या भूत से युद्ध नहीं करता | वह पहले तो विष या भूत को हमसे जोड़ने वाले बंधन को काट देता है | फिर अपने बल और तेज से उसे ऐसी जगह स्थानांतरित कर देता है जहाँ वो नुक्सान न कर सके | “वक्रतुण्ड” शारीरिक विशेषता नहीं है | यह विष या भूत को पहचान कर उस पर सटीक प्रहार के तरीके को दर्शाता है | “सर्वनागप्रशमनम्” यह स्पष्ट करता है कि यह शक्ति नागों से जुड़ीं **नकारात्मक** ऊर्जाओं को शांत करती है | यह कुंडलिनी असंतुलन, वंशानुगत नाग-दोष और भूमिगत ऊर्जाओं पर नियंत्रण का संकेत है |

In this verse, the Garuda (Divine Eagle) principle is established as the western face of Panchamukhi Hanuman. This principle is not only powerful, but also extremely subtle and precise in terms of the method of operating. Lord Garuda is known as an antidote to poison, but here the scope is expanded to include spirit disturbances also. This is because both poison and spirit influences enter unnoticed, weaken life-energy from within, and cause damage by lingering where they do not belong. To counter these, more than an overwhelming force, a surgical force is needed. The Garuda principle does not bombard poison or spirits. It first severs their connection to us, and then, through its strength and radiance, relocates them to a place where they can no longer cause harm. The curved beak is not a physical trait. It is a symbol of focused and precise action. It pacifies ***Negative*** *serpentine energies, and denotes a control on Kundalini related imbalances, ancestral nāaga related complications, and subterranean forces.*

← सौकर मुख - उत्तर
Divine Wild Boar - North

गरुड़ मुख
पश्चिम दिशा की ओर

Divine Eagle
West Facing

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @mosurkeli

नारसिंह मुख - दक्षिण →
Divine Lion - South

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @Majhiramakanta

उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम् |
पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् || 6 ||

उत्तरं (उत्तर दिशा में) | **सौकरम्** (धरती खोदने वाला प्राणी (जंगली सूवर)) | **वक्त्रम्** (मुख) | **कृष्णम्** (गहन, श्याम) | **दीप्तम्** (प्रकाशमान, तेजस्वी) | **नभोपमम् – नभः** (आकाश) + **उपमम्** (के समान (विशाल)) | **पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् - पाताल** (चेतना से नीचे के लोक) + **सिंह** (हिंस्र, आक्रामक प्रवृत्तियाँ) + **वेताल** (बिना शरीर के काम करने वाली शक्तियाँ) + **ज्वर** (तेज़ बुखार, दीर्घकालिक जकड़न) + **रोग–आदि** (और ऐसे अन्य रोग) + **कृन्तनम्** (सूक्ष्म स्तर पर बंधनों को काट देना) = *The northern face is the Divine Wild Boar - dark, radiant, vast like the sky - cutting through violent forces from the underworld, sudden high fevers & deep-seated diseases.*

पंचमुखी हनुमान के उत्तर मुख सौकर तत्त्व हैं | यह तत्त्व गहराई में जाकर स्थिरता स्थापित करता है | पाताल–सिंह–वेताल का समूह यहाँ तीन अलग-अलग वस्तुओं का उल्लेख नहीं है, बल्कि उन शक्तियों का संकेत है जो चेतना की सतह के नीचे, छिपे हुए स्तरों पर सक्रिय रहती हैं | पाताल गहरे स्तरों को दर्शाता है | सिंह वहाँ उपस्थित असंयमित शक्ति का प्रतीक है | वेताल ऐसी शक्तियों और जीवों को कहते हैं जिनका अपना शरीर नहीं होता | ये गहराइयों में रह कर हमसे संपर्क बना लेते हैं और हमारी जीवन-ऊर्जा को स्वयं के अस्तित्व के लिए उपयोग करने लगते हैं | इस तरह ये हमें कमज़ोर करते रहते हैं |

सौकर तत्त्व ऐसी शक्तियों और जीवों की जड़ तक जाकर संतुलन पुनः स्थापित करता है | यहाँ ज्वर याने अचानक आने वाले तेज़ बुखार की बात की गयी है | हम जानते हैं कि तेज़ बुखार, शरीर की आंतरिक व्यवस्था में असंतुलन का संकेत होता है | यह असंतुलन ही शरीर में अचानक बढ़ी गर्मी के रूप में सामने आता है | सौकर तत्त्व जीवन-शक्ति को स्थिर करता है, पृथ्वी तत्त्व को सुदृढ़ करता है, और खोई ऊर्जा को वापस ला कर ये संतुलन पुनः स्थापित करता है |

यहाँ कृन्तनम् का अर्थ नाश करना नहीं, बल्कि अस्वाभाविक बंधनों को उनकी जड़ से अलग करना है - चाहे वे रोग हों, सूक्ष्म प्रभाव हों, या गहरे मानसिक-ऊर्जात्मक विकार | उत्तर दिशा, जो स्थिरता और गहराई की दिशा है, इस तत्त्व के लिए उपयुक्त है | उत्तर दिशा शुद्धि के बाद स्थायी संतुलन को दर्शाती है | इस प्रकार उत्तर में सौकर मुख गहरे स्तर पर शुद्धि और संतुलन का प्रतीक है | इस संतुलन से अच्छी शक्तियाँ, जो दब गयी थीं, ऊपर आती हैं, और नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव समाप्त होता है |

*The northern face of Panchamukhi Hanuman holds the **Saukara (Divine Wild Boar) principle**, a force that acts through deep stabilisation and extraction of dangers from their root. It acts on forces that exist below the surface of conscious awareness. The "underworld" here signifies subterranean or ancestral layers of existence. Any raw, instinctive disturbance embedded in those layers; or parasitic energies which don't have a body are the focus of this principle. These hidden forces anchor themselves in unresolved depths of our consciousness and deplete our life force by consuming it for their survival.*

The Divine Wild Boar principle operates at the inner, foundational level where these disturbances exist. It provides us firm grounding and restores balance. Note that the verse mentions sudden high fever – which we know is a systemic imbalance inside us manifesting as abnormally high body temperature. The Divine Wild Boar principle fixes this imbalance by re-anchoring life-force, stabilising earth-element integrity, and bringing back displaced vitality.

*Since its mode of working is cutting entanglements at their origin, this principle is aligned with **North**, the direction of stillness, depth, and ascent through stability. The north direction governs re-establishment of order, ensuring that once disturbances are removed, there is continuous stability. Hence, Divine Wild Boar in the North stands as the **Guardian of deep equilibrium** - slow, immense, and unwavering. It restores the positive forces within us which got "buried" and neutralises the negative forces.*

← वानर मुख - पूर्व
Divine Monkey - East

सौकर मुख
उत्तर की ओर

Divine Wild Boar
North Facing

गरुड़ मुख - पश्चिम →
Divine Eagle - West

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम् |
येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाख्यं महासुरम् || 7 ||
जघान शरणं तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं परम् |
ध्यात्वा पञ्चमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् || 8 ||

ऊर्ध्वम् (ऊपर की ओर) | **हयाननम्** – **हय** (घोड़ा, अश्व) + **आननम्** (मुख) | **घोरम्** (जिसे रोकना असंभव हो, ऐसी, सीमाओं को तोड़ देने वाली तीव्र शक्ति) | **दानवान्तकरं** – **दानव** + **अन्त** + **करम्** (किसी एक दानव का नहीं, बल्कि दानवी शक्ति के काम करने के तरीके का अंत करने वाली) | **परम्** (सर्वोच्च शक्ति) | **येन** (जिसके द्वारा) | **वक्त्रेण** (इस मुख के द्वारा) | **विप्रेन्द्र** – **विप्र** (विद्वान) + **इन्द्र** (श्रेष्ठ) (मिल के अर्थ – "हे विद्वानों में श्रेष्ठ" - ये हमें, अर्थात् पढ़ने वाले को कहा जा रहा है जो ये गहरी बात समझ सके) | **तारकाख्यं** – **तारक** + **आख्यम्** (तारक नाम से प्रसिद्ध) | **महासुरम्** – **महा** + **असुरम्** (असुर-तत्त्व को, असुरों के काम करने के तरीके को) | **जघान** (जड़ से समाप्त करने वाला) | **शरणम्** (आश्रय, सुरक्षित आधार) | **तत्स्यात्सर्वशत्रुहरं** - **तत्** (वही (हयानन से जुड़ा हुआ स्वरूप)) + **स्यात्** ((बाकी चार मुखों के साथ मिल के) हो जाता है) + **सर्व** (सभी) + **शत्रु** (शत्रुओं को) + **हरम्** (मिटाने वाला) | **परम्** (सर्वोच्च स्वरूप) | **ध्यात्वा** (ध्यान करें) | **पञ्चमुखम्** (पाँच मुखों वाले) | **रुद्रम्** (समस्त बंधनों को तोड़ने वाली चेतना-शक्ति के स्वरूप) | **हनुमन्तम्** (हनुमान जी (का जो)) | **दया-निधिम्** (दया के सागर हैं)

= O wisest one (this phrase is addressing us, the reader, who is absorbing the deep truth being shared) This principle is represented by a divine Horse face. The direction of this face is vertical and upwards. This principle is an unstoppable force which works in unconventional ways. It does not target individual negative entities. Instead, it dissolves the very method and structure through which these negative entities affect us. By this principle, even the biggest obstruction to our spiritual upliftment is made powerless. (With this principle added to the 4 we studied earlier) Panchamukhi Hanuman becomes the supreme refuge Who has the ability to remove ALL hostilities directed at us. Hence, it is suggested to meditate on Him. He is the One who is compassionate yet ferocious enough to break any shackle tying us down.

इन दोनों श्लोकों में हयानन स्वरूप को पंचमुखी हनुमान के भीतर स्थित अंतिम और सर्वोच्च तत्त्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है | यह तत्त्व ऊर्ध्व दिशा से जुड़ा है, क्योंकि इसका कार्य सामान्य संघर्ष-क्षेत्र के भीतर नहीं, बल्कि उससे ऊपर होता है | यह उन अवरोधों को लक्ष्य बनाता है जो नियमों और (असुरों तथा दानवों द्वारा तप कर के मांगे हुए) वरदानों के माध्यम से कार्य करते हैं | हयानन तत्त्व की शक्ति प्रत्यक्ष युद्ध नहीं करती | यह हमारी प्राण शक्ति को बिना रुके, गति के साथ ऊपर जाने का मार्ग खोलती है | ऐसा कर के ये हमारी चेतना को ही उस स्तर तक उठा देती है जहाँ अवरोध समाप्त हो जाते हैं | जब प्राण-शक्ति बिना रुके ऊपर उठती है, तो नकारात्मक शक्तियाँ हमें रोकने के काबिल ही नहीं रह जातीं |

यहाँ "तारकाख्य महा-असुर" किसी पौराणिक पात्र का नाम नहीं, बल्कि असुर-तत्त्व का संकेत है – शक्ति (या हमारे ही अंदर की प्रवृत्ति) जो हमारी चेतना और प्राणों को ऊपर उठने से रोकती है | "दानव-अन्त-करम्" में भी किसी एक दानव की नहीं, दानव तत्त्व की बात की जा रही है | हयानन तत्त्व की शक्ति असुरों या दानवों के शरीर को नहीं, बल्कि उनके अस्तित्व को बनाये रखने वाले कारणों को समाप्त करती है | इसीलिए श्लोक में इस तत्त्व को "घोर" कहा गया है - सीमाओं को तोड़ देने वाली, तीव्र शक्ति के साथ काम करने वाला तरीका | चित्र में इसे ऊपर जाते हुए प्राणों के माध्यम से दिखाया गया है | हमारे शरीर के अंदर तेज़ भागते अश्वों की तरह प्राण ऊर्जा हमारे सबसे ऊपर के चक्र, सहस्रार की ओर जा रही है |

इस प्रकार ये दोनों श्लोक मिलकर बताते हैं कि पहले चार तत्वों के साथ हयानन तत्त्व को मिला के बने पंचमुखी हनुमान एक परम शक्ति हैं | पंचमुखी हनुमान हमारे अंदर खतरों से लड़ने की, और उनसे ऊपर उठा देने वाली शक्ति को सक्रिय करते हैं | वे रुद्र - अर्थात तीव्रता से बंधन काटने वाले होने के साथ साथ दया के सागर भी हैं | इसलिए, उनकी शरण में आ जाना हमारे लिए उचित है |

*The Divine Horse principle targets obstructions existing above the plane of direct engagement - limitations created by cosmic permissions or, in layman language, "boons earned by demonic entities". The Divine Horse principle does not "fight in the open". Its very presence restructures our reality so that obstructions collapse. "Daanav" and "Asura" are terms used for demons in ancient Indian texts. Here, they signify a **category** of resistance - forces that block upward movement of our consciousness, thus blocking our spiritual upliftment. The Divine Horse principle does not destroy these resistances through confrontation. It enables our Prāaṇa (Life force) to ascend uninterrupted. By doing so, it elevates our life force beyond the plane where these resistances operate. In the image, this is shown as life force running within our body like horses, up towards the Crown chakra – Sahasraar.*

हयानन (अश्व मुख)
ऊर्ध्व (ऊपर) की ओर

Hayaanan Face
Upwards Facing

पहले चार मुख, और पांचवा मुख ऊपर की ओर
इन्हें 3D में देखें | आप मध्य में हैं, आपकी दृष्टि पूर्व में है |

First 4 faces, 5th one upwards
Visualize in 3D. You at the centre, facing East.

कुछ महत्त्वपूर्ण बातें, आगे बढ़ने से पहले

1) पूर्व की तरफ देखते हुए इन पाँचों मुखों की अपने आस पास कल्पना करना एक बहुत अच्छा तरीका है, कवच को अपने अंदर बसाने का | पंचमुखी हनुमान जी का ये कवच हमारे अंदर समा कर, हमें अंदर से मज़बूत बना कर, हमारी रक्षा करता है | ये हमें आध्यात्मिक रूप से निखारता है | जितना ये आपके अंदर बसता चला जाएगा, उतना आपको अपने अंदर ऊर्जा का, आत्मविश्वास का, प्रसन्नता का बढ़ना महसूस होगा | इस प्रकार आप पाएंगे / पाएंगी कि सुरक्षा के साथ साथ और भी कई फ़ायदे आपको मिल रहे हैं | तभी दूसरे ही श्लोक में कवच के लिए कहा गया है, **"सर्वकामार्थसिद्धिदम्"** | सुरक्षा के साथ साथ हमारी अन्य सभी **उचित** कामनाओं को पूरा करने की शक्ति देने में भी यह कवच, यह पंचमुखी रूप, पूरी तरह सक्षम है |

कभी कभी हम अपनी कल्पना की शक्ति को वज़न नहीं देते | यह शक्ति हम मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है, यदि हम इसका सही प्रयोग करें | इन पांचों मुखों को कल्पना की शक्ति से अपने चारों ओर तथा ऊपर की ओर देखना, अनुभव करना, अपने आप में एक **योगिक प्रक्रिया** है | यह प्रक्रिया पंचमुखी हनुमान जी की कृपा को हमारे जीवन में लाने में मदद करती है |

2) जब आप पंचमुखी हनुमान जी के पाँचों मुखों की कल्पना करेंगे, तो आपके मन में एक प्रश्न आ सकता है - 3D में मुखों की जो दिशा और जो क्रम बताया गया है, उसका 2D चित्रों से क्या संबंध है? 2D चित्रों में हम बाएँ से दाएँ क्रम में देखते हैं - पहले सौकर (वराह भी कहा जाता है), फिर गरुड़, बीच में वानर (हनुमान जी), उसके बाद नरसिंह और अंत में हयानन | यह क्रम ऐसा क्यों रखा गया है?

मेरे अनुसार पाँच मुखों का यह 2D क्रम, 3D सुरक्षा व्यवस्था को एक सीधी रेखा में खोलकर दिखाने का तरीका है, ताकि हम उससे आसानी से जुड़ सकें | इसीलिये 2D में वानर मुख को बीच में रखा गया होगा, क्योंकि उनसे जुड़ना सबसे सरल है - वह हमारे प्रिय हनुमान जी का स्वरूप है | बाकी मुखों को बाएँ और दाएँ इस आधार पर रखा गया होगा कि उनकी सुरक्षा शक्ति किस तरह काम करती है | क्रम को बाएँ से दाएँ बनाने का कारण? क्योंकि हम बाएँ से दाएँ पढ़ते और लिखते हैं, इसलिए 2D के चित्र को वैसे ही सोचा गया होगा |

इस विचार पर आगे सोचें तो सबसे पहले वह मुख रखा गया जो आधार और स्थिरता से जुड़ी सुरक्षा देता है – सौकर (वराह) मुख | इसके बाद छिपे हुए खतरों से रक्षा (जो गरुड़ मुख करता है) को सामने से आने वाले खतरों से अधिक महत्व दिया गया | इसलिए वराह मुख के ठीक बाद गरुड़ मुख रखे गए | मध्य में वानर मुख - हमारी चेतना, इच्छा और भक्ति का प्रतीक | फिर आये दायीं तरफ | दायाँ पक्ष, दाएं हाथ की तरह, सीधे और सक्रिय रूप से शत्रुओं का मुकाबला करने को दर्शाता है | इसलिए वानर मुख के तुरंत बाद नरसिंह मुख रखे गए | और अंत में , नकारात्मकता से ऊपर उठा कर दी हुई सुरक्षा - **हयानन मुख** द्वारा | मेरे अनुसार 2D क्रम के पीछे की सोच यह है |

3) अब हम उन दस वस्तुओं को समझेंगें जिन्हें प्रभु ने अपने दस हाथों में लिया हुआ है | ये इस कवच का बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है | हर वस्तु एक प्रतीक है, प्रभु के काम करने के तरीके का | ध्यान से पढ़ें और अपने अंदर उतारें |

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @awedict

Some important insights before we proceed

*1) Imagining these five faces around you while facing east is very beneficial. It is an effective method to have the Armour-text settle within us. As Panchamukhi Hanuman Armour-text settles within us, it strengthens us from the inside as it protects us. Thus, it refines us spiritually. As this Armour-text settles deeper within you, you will feel an increase in energy, self-confidence, and inner happiness. You will realize that along with protection, you are receiving many other benefits as well. This is why, in the 2nd verse earlier, the Armour-text was described as one which "enables support to ALL ambitions" . This text and this form are capable of providing protection AND fulfilling all our **valid** desires.*

*We often underestimate the power of our imagination. It is a boon for us humans, when used correctly. Using imagination to visualize and experience these five faces around and above us is a **spiritual process**. It facilitates the grace of Lord Panchamukhi Hanuman coming into our lives.*

2) As you visualize the 5 faces, a natural question may occur to you - How is this 3D placement connected to the 2D depiction? In 2D images, from left to right, we have Divine Boar, Divine Eagle, Divine Monkey (central), Divine Lion and finally Divine Horse. What is the logic behind this order?

In my view, the 2D order of the five faces is a way of unfolding the 3D form into a simpler form that we can relate to. Hence, in 2D, Divine Monkey face must have been kept as the central face - the face easiest to relate to – it being our Dear Lord Hanuman's face. The other faces must have been placed to the left and right based on how their protective energies function. Why a left to right based logic? Since we read & write from left to right, the 2D depiction must have been thought in a left to right order too.

Building on this logic further, the first face on the left needs to give firm foundation and stability - done by Divine Boar. Then, protection from hidden threats is prioritized over combating direct threats. Hence Divine Eagle comes after Divine Boar. Central face should denote natural inclination and devotion, hence Lord Hanuman's face has this position. Coming to the right side – right side, like right hand, represents active combat with direct threats. Hence, Divine Lion comes immediate right to the central face. And finally, the mode operating at a level beyond Negativity - given by Divine Horse. In my view, this is the logic of the 2D layout.

3) We will now understand the 10 objects held by the Lord in His 10 hands. This is a very critical part of the Armour-text. Each object represents a specific function through which the Lord operates. Please read and absorb carefully.

AI enhanced image. Original Pinterest image courtesy - @awedict

खड्गं त्रिशूलं खट्-वांगं पाशम्-अंकुशपर्वतम् |
मुष्टिं कौमोदकीं वृक्षं धारयन्तं कमण्डलुम् || 9 ||
भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशभिर्मुनिपुङ्गवम् |
एतान्यायुधजालानि धारयन्तं भजाम्यहम् || 10 ||

खड्गं (तलवार – भ्रम को काटने वाली और शत्रु का अंत करने वाली शक्ति का प्रतीक) | **त्रिशूलं** (तीन गुणों - सत्व, रजस और तमस पर नियंत्रण करने का प्रतीक) | **खट्-वांगं** (दंड पर रखा नरमुंड | आसक्ति-मुक्त शक्ति और मृत्यु से निर्भयता का प्रतीक) | **पाशम्** (नकारात्मक शक्तियों को बाँधने का प्रतीक) | **अंकुश** (शक्ति को सही दिशा में मोड़ने का प्रतीक) | **पर्वतम्** (अडिग स्थिरता और संपूर्ण संरक्षण का प्रतीक) | **मुष्टिं** (मुट्ठी में पकड़ी हुई) **कौमोदकीं** (कौमोदकी गदा – सही और निर्णायक शक्ति का प्रतीक | कौमोदकी श्री विष्णु की गदा है) | **वृक्षम्** (जीवन-शक्ति, पारिवारिक समर्थन और आश्रय का प्रतीक) | **धारयन्तम्** (धारण किया हुआ) **कमण्डलुम्** (कमंडलु – दिव्य जल के लिए पात्र | शुद्धि और आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक) | **भिन्दिपालम्** (भिंदिपाल – दूर स्थित शत्रु पर अचूक मार करने के लिये छोटा भाला | यह ऐसी शक्ति का प्रतीक है जो चला दी जाए तो शत्रु का अंत करती ही करती है) **ज्ञानमुद्राम्** (ज्ञान मुद्रा – विवेक, सही निर्णय और शक्ति को समझ के साथ उपयोग करने का का प्रतीक | प्रभु ने भिन्दिपाल को ज्ञान मुद्रा में धारण किया हुआ है - इस मारक अस्त्र को समझदारी से चलाये जाने का प्रतीक) | **दशभिः** (इन दस तरीकों से कार्य करने वाले) **मुनिपुङ्गवम्** (श्रेष्ठ मुनि (हनुमान जी). पुङ्गव का अर्थ बैल होता है, यहाँ पर अर्थ है श्रेष्ठ, उच्च) | **एतान्यायुधजालानि** - **एतानि** (इन सभी) + **आयुध** (हथियारों के) + **जालानि** (के जाल को) | **धारयन्तम्** (धारण करने वाले (प्रभु पंचमुखी हनुमान)) | **भजाम्यहम्** - **भजामि** ((का) भजन करता हूँ) + **अहम्** (मैं - अर्थात् श्री गरुड़. लेकिन यहाँ पर "मैं" का अर्थ पढ़ने वाला व्यक्ति भी लिया जा सकता है | जैसे जैसे हम कवच में गहरे उतर रहे हैं, यह भावना आना कि ये सब हम ही कह रहे हैं, एक अच्छी भावना है)

पर्वत
Mountain

खड्गं
Sword

वृक्ष
Tree

कमण्डलु
Round vessel for water

अंकुश
Goad used to guide elephants

कौमोदकी गदा
Mace named Kaumodakee

त्रिशूल
Trident

खट्-वांग
Khatwaang – skull mounted staff

पाश
Noose

भिन्दिपाल
Bhindipaal – a type of Javelin

हाथ में कमण्डलु ऐसे पकड़ा जाता है
Way to hold the Kamandalu

प्रभु ने कमण्डलु ऐसे धारण किया हुआ समझें | चित्र में तकनीकी कारणों से यह दिख नहीं रहा है |
Visualize the Lord holding the Kamandalu in the pose above. Not coming out in the image due to technical constraints.

ज्ञान मुद्रा
Knowledge Pose

प्रभु ने भिन्दिपाल को ज्ञान मुद्रा में धारण किया समझें | चित्र में तकनीकी कारणों से यह दिख नहीं रहा है |
Visualize the Lord holding this weapon in the pose above. Not coming out in the image due to technical constraints.

खड्गं *(sword – symbolizes the power that cuts through delusion and destroys the enemy)* | **त्रिशूलं** *(trident – symbolizes control over the 3 fundamental qualities)*| **खट्-वांगं** *(staff bearing a human skull – symbolizes power without attachment and fearlessness from death)* | **पाशम्** *(noose – symbolizes binding negative forces)* | **अंकुश** *(goad to guide elephants – symbol of giving the right direction to strength)* | **पर्वतम्** *(mountain – symbol of unshakable stability and complete protection)* | **मुष्टिं** *(clenched fist)* **कौमोदकीं** *(Kaumodakee mace – symbol of righteous strike and decisive force. Kaumodakee is Lord Vishnu's mace)* | **वृक्षम्** *(tree – symbol of life-force, ancestral support and shelter)* | **धारयन्तम्** *(holds a)* **कमण्डलुम्** *(Kamandalu - Round vessel for Divine water – symbol of purity and spiritual discipline)* | **भिन्दिपालम्** *(Bhindipaala – a small spear for targeted strike on an enemy at a distance. Symbolizes a force that, once released, inevitably destroys the enemy)* **ज्ञानमुद्राम्** *(Knowledge pose – symbolizes right judgment, and mindful control over power. The Lord holding this weapon in this pose symbolizes that this lethal weapon is used thoughtfully)* | **दशभिः** *(operating through these ten modes)* **मुनिपुङ्गवम्** *(foremost among sages – Lord Hanuman)* | **एतान्यायुधजालानि** – **एतानि** *((holding) these)* + **आयुध** *(weapons)* + **जालानि** *(a connected web of these weapons)* | **धारयन्तम्** *(the One who holds these weapons (Lord Panchamukhi Hanuman))* | **भजाम्यहम्** – **भजामि** + **अहम्** *(I worship. Technically, this "I" means Lord Garuda who is narrating this text. However "I" may also be understood as the reciter. As we go deep into the Armour-text, the feeling that we ourselves are speaking these words is desirable)*

प्रेतासनोपविष्टं तं सर्वाभरणभूषितम् |
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् || 11 ||

प्रेतासनोपविष्टं - प्रेत (प्रेत , अर्थात् मृत शरीर) + **आसन** ((को) आसन, अर्थात बैठने का माध्यम) + **उपविष्टं** ((बना कर उस पर) व्यवस्थित रूप से बैठे हुए (मृत्यु और भय पर पूर्ण विजय का प्रतीक)) | **तं** (वे (श्री पंचमुखी हनुमान)) | **सर्वाभरणभूषितम् – सर्व** (सभी तरह के) + **आभरण** (आभूषणों से)+ **भूषितम्** (सजे हुए – अर्थात् पूर्ण ऐश्वर्य और सिद्धि के साथ) | **दिव्यमाल्याम्बरधरं** – **दिव्य** + **माल्य** (मालाओं का समूह) + **अम्बर** (वस्त्र) + **धरं** (धारण किये हुए) | **दिव्यगन्धानुलेपनम् – दिव्य** + **गन्ध** + **अनुलेपनम्** (दिव्य सुगंधों से लेप किये हुए – शुद्धता और आध्यात्मिक तेज का प्रतीक) = *The Lord is sitting elegantly upon a corpse, decorated with all kinds of ornaments. He is wearing celestial garlands and garments, and has divine fragrances applied on Him.*

मृत शरीर पर बैठे हुए स्वरूप को डरावने अर्थ में नहीं लेना चाहिए | इसका अर्थ यह है कि प्रभु शरीर के मोह और मृत्यु के भय से ऊपर हैं | और उन्होंने मनुष्य के सबसे बड़े मोह (शरीर के मोह) और भय (मृत्यु के भय) पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है, इसीलिए वे एक सशक्त रक्षक हैं | हाँ, "मृत शरीर पर बैठे हुए" - यह वर्णन उग्र या अजीब लग सकता है | इसी कारण आगे के शब्दों में श्लोक इस उग्रता को दिव्य आभूषणों, सुगंधों और वस्त्रों से संतुलित करता है | इसका संदेश यह है कि मृत शरीर पर विराजमान होना किसी भी तरह से भयावह, अजीब या विनाशकारी स्थिति नहीं है - मृत शरीर पर बैठे हुए भी प्रभु तेजस्वी, संयत और पूर्णतः दिव्य हैं |

ध्यान रहे, पहले श्लोक से जो ध्यान की प्रक्रिया शुरु हुई थी, वह अभी भी जारी है | यह श्लोक उस ध्यान में एक और आयाम जोड़ता है - प्रभु को ऐसे रूप में दिखा कर जिन्होंने मोह और मृत्यु पर विजय पाई है, जो दिव्य शुद्धता और गरिमा से प्रकाशित हैं, और जो शक्ति को बिना विकृति के धारण करते हैं | हम अभी भी कवच के श्लोकों तक नहीं पहुंचे हैं | वहाँ पहुंचने की तैयारी ही कर रहे हैं हम, प्रभु के रूप को और स्पष्ट कर के | यह तैयारी महत्त्वपूर्ण है, इसलिए इसे समय देना उचित है |

Seated upon a corpse should not be taken in a scary way. It signifies the Lord being above attachment with physical body and fear of death. And since He has mastery over our biggest attachment (physical body) and most fundamental fear (death), He is a strong Protector. Yes, this description of being seated upon a corpse does sound aggressive or weird. Hence, in the words which follow, the verse balances this aggressive imagery with divine ornamentation, fragrance, and garments. This is to convey that the Lord being seated on a dead body is not scary, weird, or destructive - He is radiant, composed, and divine even while sitting on a corpse.

Please note, the meditation process which started with the first verse is still on. This verse is adding to it by describing the Lord as One who has conquered attachment and death. One who radiates divine refinement and who holds power without distortion. We have not reached the core Armour description yet. We are still preparing to reach there, by focusing further on the Lord's form. This preparation is important, and deserves the time we are investing in it.

सर्वाश्चर्यमयं देवं हनुमद्विश्वतोमुखम् |
पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रम् || 12 ||

सर्वाश्चर्यमयं – सर्व + **आश्चर्य** + **मयम् देवं** (सभी प्रकार के आश्चर्य से परिपूर्ण देवता) | **हनुमद्विश्वतोमुखम्** – **हनुमत्** + **विश्वतः** + **मुखम्** (पूरे विश्व में (सभी दिशाओं में) जिनका मुख है, ऐसे हनुमान प्रभु – संपूर्ण जागरूकता और सभी तरफ दृष्टि का संकेत) | **पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रम्** - **पञ्च-आस्यम्** ((उनके ये) पाँच (मुख)) + **अच्युतम्** (अविनाशी (हैं और)) + **अनेक** + **विचित्र** + **वर्ण** + **वक्त्रम्** (अनेक प्रकार के विलक्षण वर्णों वाले हैं | वर्ण का अर्थ रंग होता है, यहाँ अर्थ है विविध गुण | **वक्त्रम्** का अर्थ है मुख) = *Lord Hanuman is a Deity full of wonders. His presence covers the entire world, which means He has His attention everywhere. This five-headed form of His is an eternal One with each Head having multiple colours, i.e. qualities.*

यह श्लोक ध्यान को शारीरिक वर्णन से आगे ले जा रहा है | यहाँ प्रभु का ब्रह्मांडीय स्वरूप सामने आ रहा है | ब्रह्मांडीय स्तर पर उन्हें **सर्वाश्चर्यमयं** - "सभी प्रकार के आश्चर्यों से पूर्ण" बताया गया है | हमारे प्रिय और सहज उपलब्ध भगवान हनुमान वास्तव में एक ऐसा दिव्य माध्यम हैं, जिनसे अनेक दिव्य और ब्रह्मांडीय सिद्धांतों तक पहुँचा जा सकता है | यह बात उन्हें केवल महान और शक्तिशाली ही नहीं, बल्कि वास्तव में "आश्चर्यमय" भी बनाती है |

हनुमद्विश्वतोमुखम् - उनकी दृष्टि पूरे विश्व में व्याप्त है | इसका अर्थ है पूर्ण जागरूकता - उनकी दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता | यहाँ संरक्षण का तत्त्व और गहरा होता है: जो रक्षक सभी दिशाओं में देख सकते हैं, उन्हें कोई भी संकट या आक्रमण पार नहीं कर सकता | **पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रम्** - उनके पाँच मुख अनेकों गुणों से युक्त कार्य-क्षमता का प्रतीक हैं | इस रूप में प्रभु सदा से थे, सदा रहेंगे और बुलाये जाने पर सदा ही रक्षा करेंगे |

यह श्लोक, और इसके बाद आने वाले दो श्लोक, ध्यान प्रक्रिया को उसके अंतिम चरणों में ले जाएंगे | इन तीन श्लोकों से हम प्रभु के स्वरूप का विस्तार कर रहे हैं, ताकि कवच के मुख्य श्लोक आने से पहले उनका दिव्य रूप हमारे अंदर पूरी तरह स्थिर और स्पष्ट हो जाए |

This verse expands the meditation from physical description to the Lord's cosmic stature. At a cosmic level, He is described as "filled with every possible wonder". Our Lord Hanuman, so dear to us and so easily accessible to us, is actually a Divine medium through which multiple divine and cosmic principles can be accessed. This is what makes Him not just great, not just strong, but also "filled with wonders"!

The verse says - He has His eyes across the entire world. This establishes total awareness - nothing escapes His perception. Protection logic deepens here: a Guardian who sees in all directions cannot be bypassed by an incoming threat. The five faces represent multi-dimensional operations. In this form, the Lord has been eternal and will always come for protection when invoked.

The meditation process is reaching its final stages with this verse, and the 2 which will follow. Through these 3 verses, we are expanding the Lord's form. This to make sure that before the core armour verses, His Divine form is established clearly within us.

शशाङ्क-शिखरम् (शशांक = चन्द्रमा; शिखर = सिर के सर्वोच्च बिंदु (पर धारण किया हुआ) – शीतलता और संतुलन का प्रतीक) | **कपि-राज-वर्यम्** (कपियों, अर्थात् वानरों में श्रेष्ठ) = *The supreme among the monkey lineage, bearing the crescent moon upon the Crest (the topmost point) of His head.*

यह छोटी सी पंक्ति गहरा अर्थ रखती है | उनके सिर पर स्थित चन्द्रमा की छवि सीधे भगवान शिव की याद दिलाती है, जिन्हें "चन्द्रशेखर" कहा जाता है - अर्थात् सिर पर चन्द्र धारण करने वाले | यह संकेत करता है कि हनुमान जी का संबंध रुद्र परंपरा से है | यह, यह भी दर्शाता है कि उनकी अपार शक्ति शीतल और संतुलित नियंत्रण के अधीन है | चन्द्रमा - मन, भावनाओं की लहरों और उग्रता पर नियंत्रण का प्रतीक है | इसलिए, उन्हें **शशाङ्कशिखरं** कहना ये दर्शाता है कि अपने सबसे उग्र रूप में भी प्रभु की शक्ति भीतर से संतुलित और पूर्णतः नियंत्रित रहती है |

"वानर वंश में श्रेष्ठ" कहे जाने से यह बात और गहरी हो जाती है | वानर वंश - गति, फुर्ती, भावनात्मक तीव्रता और विस्फोटक कार्यों का प्रतीक है | "वानरों में श्रेष्ठ" होना केवल उनके समर्थ होने का ही नहीं, बल्कि अस्थिर और उग्र ऊर्जा पर पूर्ण नियंत्रण का संकेत है | वानर-स्वभाव की चंचल शक्ति उनके भीतर चन्द्रमा की शांति से संतुलित हो रही है | प्रभु केवल गतिशील नहीं हैं; वे गति के स्वामी हैं | उनके भीतर गति भी है और गहरी स्थिरता भी | शक्ति है, पर वह संतुलित है |

This brief but powerful line carries profound weight. The image of the Moon upon Lord's crest clearly reminds us of Lord Shiva, who is known as "Chandrashekhara"- the Bearer of the crescent moon. This subtly affirms Lord Hanuman's Rudra lineage. This also signals that His immense power is governed by an authority which has a cooling, stabilizing effect. In classical symbolism, the Moon represents mastery over the mind, emotional tides, and aggression. Thus, calling the Lord as someone who has the moon at His crown means that even in His most fierce manifestations, His force remains internally regulated and perfectly controlled.

Being called Supreme among the Monkey (Vaanara) lineage deepens this insight. The monkey lineage represents speed, agility, emotional intensity, and explosive action. To be the "supreme among monkeys" is a statement of mastery over volatile energy. The restless force symbolized by the monkey lineage is pacified and controlled by lunar stillness in His case. Lord Hanuman is not merely dynamic; He governs dynamism itself. Motion is held within calm. Strength and stability are going hand in hand.

पीताम्बरादिमुकुटैः उपशोभिताङ्गं |
पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि || 14 ||

पीताम्बरादिमुकुटैः उपशोभिताङ्गं - पीत (पीले) + **अम्बर** (वस्त्र) + **आदि** (और अन्य परिधान) + **मुकुटैः** ((और) मुकुटों से) + **उप-शोभित-अङ्गम्** (और भी अधिक शोभित होते हुए अंग) | **पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं – पिंग** + **अक्षम्** (पिंगल रंग की आँखें – पिंगल रंग को सोने जैसे चमकदार पीले और ताम्बे जैसे भूरे रंग का मिश्रण मानिये | इस रंग की आँखें प्रभु की तेजस्वी, जागरूक और तपस्वी दृष्टि का संकेत हैं) + **आद्यम्** (आदि स्वरूप, मूल सत्ता) + **अनिशम्** (निरंतर, सदा से उपस्थित) | **मनसा** (मन से) | **स्मरामि** (स्मरण करता | करती हूँ) = *I constantly pray in my mind to the primordial Lord (Panchamukhi Hanuman) Who has Golden-Copper coloured eyes, and Who is further adorned with yellow garments and resplendent crowns.*

यह श्लोक ध्यान प्रक्रिया को पूर्ण करता है और हमारे ध्यान को ब्रह्मांडीय वर्णन से वापस प्रभु के साकार रूप पर ले आता है | पहले हमने प्रभु को विशाल, ब्रह्मांडीय स्वरूप में देखा और उनकी शक्ति, संतुलन और अधिकार को स्थापित किया | अब ध्यान हमारे भीतर की अवस्था पर आता है, जब हम कहते हैं - "मैं मन से उनका स्मरण करता | करती हूँ |" अब प्रभु केवल बाहर नहीं हैं, बल्कि भीतर स्थापित हो गए हैं | प्रभु अब हमारी चेतना में जागरूक रूप से धारण किए जा चुके हैं |

इस श्लोक में उनके साकार रूप का जो वर्णन है, उसमें पीले वस्त्र शुभता और पालन-तत्त्व का संकेत हैं - भगवान विष्णु से, उनके "पालनहार" होने से संबंधित | आभूषण उनके दिव्य तेज को और उभारते हैं | उनका स्वरूप अब पूर्ण रूप से स्थिर, प्रकाशमान और राजसी प्रतीत होता है | सुनहरे और ताम्बे के मिश्रित रंग की आँखें सजगता और आध्यात्मिक शक्ति से युक्त जागरूकता का संकेत हैं | यह दृष्टि ऐसे दिव्य बल की है जो तीक्ष्ण, समर्थ, तत्पर और सदा उपस्थित है | उन्हें "आद्यम्" कहकर यह स्पष्ट किया गया है कि वे केवल एक रूप नहीं, बल्कि एक मूलभूत ब्रह्मांडीय शक्ति हैं |

This verse concludes the meditation process, bringing back our focus from Lord's cosmic description to His physical form. After expanding the Lord into cosmic stature and establishing His authority and balance, the focus returns to the process within us, as we say "I pray to Him in my mind." The visualization is now internalized. The Lord is now consciously held within our awareness.

In the physical form being described here, the yellow garments suggest auspiciousness and sustenance - associated with preservation principles of Lord Vishnu. The ornaments bring out Lord's radiance. The form is fully established, luminous, and royal looking. Golden – copper coloured eyes imply alertness infused with spiritual power. This gaze is of a Divine entity Who is sharp, powerful, ready, and ever-present. By calling Him "primordial", the verse affirms that He is a foundational Cosmic force.

ये दो श्लोक कवच के मुख्य श्लोक हैं...

मर्कटेशं महोत्साहं सर्वशत्रुहरं परम् |
शत्रुं संहर मां रक्ष श्रीमन्नापदमुद्धर || 15 ||

मर्कटेशं – मर्कट (वानरों) + **ईशं** (के ईश्वर – अर्थात् वानरों की गतिशील ऊर्जा के स्वामी) | **महोत्साहं – महा** + **उत्साहम्** (महान उत्साह और प्रचण्ड ऊर्जा से युक्त) | **सर्व-शत्रु-हरं** (सभी शत्रुओं का अंत करने वाले) | **परम्** (सर्वोच्च, अतुलनीय) | **शत्रुं** (बाहर या अंदर के शत्रु को) | **संहर** (पूर्णतः नष्ट करें) | **मां** (मुझे) | **रक्ष** (रक्षा प्रदान करें) | **श्रीमन्नापदमुद्धर - श्रीमन्** (हे ऐश्वर्ययुक्त प्रभु! (यह नाम श्री विष्णु के लिए लिया जाता है)) + **आपदम्** (कठिनाइयों से, संकटों से) + **उद्धर** (ऊपर उठाइये, मुक्ति दिलाइये) = *O Lord of the dynamic force represented by Monkeys, supremely energetic destroyer of all enemies, Lord of abundance (A title used for Lord Vishnu) - annihilate the enemy outside and within, protect me, and lift me out of danger and difficulties.*

यह श्लोक ध्यान से क्रिया की ओर एक स्पष्ट परिवर्तन को दर्शाता है | अब तक हमने प्रभु के स्वरूप को स्थिर किया था | अब हम उन्हें सीधे संबोधित करके रक्षा करने का निवेदन कर रहे हैं | यहाँ उन्हें गतिशील और तीव्र शक्ति के स्वामी के रूप में पुकारा गया है | साथ ही उन्हें ऐसे नाम – “श्रीमन्” - से संबोधित किया गया है जो भगवान विष्णु के लिए लिया जाता है - इसका कारण अगले श्लोक में दिया गया है | यहाँ क्रियाओं का क्रम महत्वपूर्ण है: पहले शत्रु का नाश कीजिये, फिर मेरी रक्षा कीजिये, और फिर मुझे संकट से ऊपर उठाइये | इस क्रम का अर्थ है - पहले खतरे को समाप्त करना, फिर सक्रिय संरक्षण देना, और अंत में संकट से उबार कर हमें स्थिरता और शांति देना | **इस श्लोक के साथ कवच सक्रिय हो रहा है |**

This verse marks a decisive shift from meditation to invocation. After focusing on the Lord deeply, we are now addressing Him directly with a clear intention of requesting protection. He is being addressed as the master of dynamic, rapid, intense force. He is also being addressed by a name – “Shreeman” – Lord of abundance - used for Lord Vishnu - the reason is shared in the next verse. The sequence of verbs is important here: destroy the enemy, protect me, lift me from danger. The sequence means - First neutralize the threat, then give me active protection and then elevate me from crisis. Protection here is asked in the form of ***Active*** *intervention. The Lord is invoked as the supreme remover of hostile forces and the One who restores stability after a crisis.* ***The Armour is now activated with this verse.***

These 2 verses are the core protection verses of the Armour-text…

ॐ हरिमर्कट मर्कट मन्त्रमिदं परिलिख्यति लिख्यति वामतले |
यदि नश्यति नश्यति शत्रुकुलं यदि मुञ्चति मुञ्चति वामलताम् || 16 ||

ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा ||

ॐ (परम ईश्वर का ध्वनि स्वरुप – मंत्र बोलने से पहले दिव्य शक्ति को जगाने के लिए) | **हरि-मर्कट** (दिव्य वानर स्वरुप हरि – श्री विष्णु, दिव्य वानर स्वरुप लिए हुए) | **मर्कट** (प्रचण्ड वानर शक्ति का पुनः नाम ले कर उसे और शक्ति देना) | **मन्त्रमिदं – मन्त्रम्** + **इदं** (यह मन्त्र (ॐ हरिमर्कट मर्कट)) | **परि-लिख्यति** (पूरी विधि से लिखा जाता है) | **लिख्यति** (लिखा जाता है – दोबारा कह के क्रिया को पक्का करना) | **वाम-तले** (प्रभु के बायें चरण के तलवे पर – अधीन करने और नियंत्रण का स्थान) | **यदि** (ऐसा करते ही) | **नश्यति नश्यति** (नष्ट हो जाता है, पूर्णतः नष्ट हो जाता है) | **शत्रु-कुलम्** (शत्रुओं का समूह) | **यदि** (ऐसा करते ही) | **मुञ्चति मुञ्चति** (छूट जाती हैं, मुक्त हो जाती हैं) | **वाम-लताम्** (बाएँ पक्ष से लिपटी हुई बन्धन - रूपी लता – न दिखने वाली बाधा, चिपकी हुई विपत्ति या जकड़न का प्रतीक) | **ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा** (दिव्य हरिमर्कट प्रभु को नमन और समर्पण - आपकी शक्ति जागृत हो) = *I call upon Lord Hari (i.e. Lord Vishnu) in the form of a Divine Monkey. By inscribing the following mantra* (**ॐ हरिमर्कट मर्कट**) *upon the sole of the left foot of the Lord, whole lineage of enemies perishes and Left - oriented (i.e. unseen, subtle) bondages get released.* **ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा** *i.e. O Lord Hari as a Divine Monkey, I bow and surrender to you! Let your Power be activated.*

सबसे महत्वपूर्ण बात - प्रभु को **हरि-मर्कट** - अर्थात् हरि का दिव्य वानर स्वरुप बुलाना | हम ये कवच पढ़ते पढ़ते एक ऐसे स्थान पर आ गए हैं जहाँ हमारे प्यारे श्री हनुमान, विष्णु स्वरुप लेते दिख रहे हैं ! इस पंचमुख स्वरुप में वानर मुख को छोड़ के बाकी चारों मुख तो वैसे ही श्री विष्णु से जुड़े हुए हैं | इस श्लोक में वानर मुख को भी "हरि मर्कट" कह के विष्णु जी से ही जोड़ दिया गया है! और तभी पिछले श्लोक में उन्हें “श्रीमन्” कहा गया, जो विष्णु जी का दूसरा नाम है | इस से साफ़ होता है कि पंचमुखी हनुमान, श्री विष्णु के ही एक स्वरुप हैं! कुछ समय ले कर इस बात को अपने अंदर उतरने दें ...

श्लोक में इसके आगे कवच को सक्रिय करने की प्रक्रिया बताई गयी है | इसके लिए हमें कल्पना करनी है कि **ॐ हरिमर्कट मर्कट** मंत्र प्रभु के बाएँ चरण के तलवे पर “लिखा” हुआ है | इससे विरोधी शक्तियाँ दिव्य अधिकार के अधीन हुईं, ऐसा समझें | ऐसी कल्पना करना, क्रिया शब्दों (लिख्यति, नश्यति, मुञ्चति) को दो बार कहना और अंत में **ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा** का उच्चारण करना - इन सब से मिल के कवच की रक्षा शक्ति **पूरी तरह जागृत** होती है |

वाम-लता शब्द यहाँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है | इसका शाब्दिक अर्थ “बाईं ओर लिपटी हुई लता” है | यह उन समस्याओं का प्रतीक है जो खुले आक्रमण की तरह नहीं आतीं, बल्कि चिपककर उलझाती रहती हैं | इनसे मुक्ति भी उतनी ही आवश्यक है | **ध्यान दें - पूरे स्तोत्र में केवल यही श्लोक गायत्री छंद में है | 24 पूरे अक्षर हर पंक्ति में |**

Very important observation - calling the Lord “Hari in the form of a Divine Monkey”. At this point, our very own Lord Hanuman stands in front of us as none other than Lord Vishnu! This is a revelation! In this 5 Headed form, except the Divine Monkey face, all other faces are anyways related to Lord Vishnu. In this verse, the Divine Monkey face has ALSO been linked to Lord Vishnu! And this is why the name “Shreeman” - a name for Lord Vishnu - has been used for Him in the previous verse. This proves that 5 Headed Hanuman is a form of Lord Vishnu! A few moments should be taken to let this settle within us…

Ahead in the verse are instructions for final activation of the Armour. For this, The mantra **ॐ हरिमर्कट मर्कट** *is to be visualized “written” on the Lord’s left foot’s sole - indicating that hostile forces are now placed beneath divine authority. This visualization + repetition of action verbs + chanting* **ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा** *– together* ***Activate the Armour FULLY.***

The expression “Left - oriented bondages” is important. The term used in the verse literally means a “left-side creeper”. It represents clinging yet invisible “enemies”. Just as important to release these as well! ***Note - this is the ONLY verse in the text with Gayatri Meter - 24 full letters per line.***

महत्त्वपूर्ण श्लोक नं 16 की कल्पना करने के लिए सुझाव के तौर पर चित्र आगे ... *Suggested Images to visualize the crucial verse number 16 ahead …*

अब कल्पना कीजिये कि आप इसी गुफा में प्रभु के सामने बैठे | बैठी हैं *Now imagine that you are sitting in front of the Lord in this very cave…*

अगले पन्ने पर जारी है... *Continued on the next page…*

अब प्रभु खड़े हुए और उन्होंने अपना बायाँ पाँव ऊपर उठाया...

The Lord stands up and raises His left foot…

उनके बाएं पैर के तलवे पर मंत्र लिखा आपको दिख रहा है...

Mantra is visible to you on the Sole of His Left foot…

ॐ हरिमर्कट मर्कट

यहाँ से, या इससे पहले भी, आप इस कल्पना को अपने तरीके से विकसित करें | मेरे इस पूरे कार्य का उद्देश्य यह है कि आपके और प्रभु के बीच एक स्वतंत्र संबंध बन सके | मेरे साथ उनका सम्बन्ध अपने तरीके से विकसित हुआ है, और यह एक बेहद सुंदर अनुभव है! मेरे अनुसार, स्तोत्र भी इस बात को पढ़ने वाले पर छोड़ता है कि कल्पना को किस दिशा में ले जाना है | बस इतना ध्यान रखें कि आपके तरीके में तकनीकी बातें - जैसे मंत्र क्या है और कहाँ लिखा है - सही हों | साथ ही, इसे किसी बाहरी शत्रु की ओर केंद्रित करने से सावधान रहें - इसके आपके ऊपर भी कार्मिक परिणाम होंगे |

मेरी कल्पना में इसके आगे क्या हुआ, वह आपके साथ साझा करना चाहूंगा | चित्रों के इस क्रम के बाद प्रभु को उनका यह मंत्र लिखित चरण मेरे सिर पर रखते हुए मैंने देखा और अनुभव किया | जब ऐसा हुआ, तो वह उनका आशीर्वाद पाने जैसा अनुभव था! मुझे लगा कि इस प्रकार उन्होंने मेरे भीतर के शत्रुओं – अहंकार, हानिकारक विचार, बुरी आदतें, छिपी अशांतियाँ, रुकावटें आदि पर काम किया | इस प्रकार उन्होंने मुझे शुद्ध और सशक्त बनाया, और बना रहे हैं | यह विचार मुझे, मेरे ह्रदय को, हर बार, गहरी कृतज्ञता से भर देता है |

After this point, or even before, feel free to develop your own version of this visualization. My purpose behind creating this document is to enable an independent connection between the Lord and you. My connection with Him has developed in its own way, and it is a very beautiful feeling! In my view, even the text leaves it to the reader as to how should this visualization be developed. Just make sure that in your version, technical details like the Mantra and where it is written are correct. Also, be cautious towards directing it on an external enemy - that will have Karmic impact on you also.

Wish to share my version of the visualization with you. After the sequence that I have shown here, I saw and experienced the Lord keeping His Mantra written foot on my head. It was a blessed feeling as this happened! I believe this way He has worked on enemies within me – Ego, harmful thoughts, bad habits, hidden disturbances, blockages etc. This is how He has purified and strengthened me, and He still continues to do so. This thought fills me and my Heart with gratitude every single time!

कवच का समापन अभी बचा है | आगे पढ़ें...

The closure of the Armour-text is remaining. Please read ahead…

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रुसंहारकाय स्वाहा || 17 ||

ॐ - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप | **नमो** - नमस्कार | **भगवते** - भगवान को | **पञ्चवदनाय** - पाँच मुखों वाले (भगवान को) | **पूर्वकपिमुखाय** – (उन पांच मुखों वाले भगवान के) पूर्व दिशा में स्थित वानर मुख को | **सकलशत्रुसंहारकाय** - सभी शत्रुओं का संहार करने वाले को | **स्वाहा** - पूर्ण समर्पण, उनकी कृपा जागृत हो = मैं पंचमुखी भगवान के पूर्व में स्थित वानर रूप को, जो समस्त शत्रुओं का संहार करते हैं, नमस्कार कर पूर्ण समर्पण करता / करती हूँ | उनकी कृपा जागृत हो | = *I bow in surrender to the East-facing Divine Monkey aspect of the Five-Faced Lord, Who destroys all enemies. Let His grace be activated.*

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय दक्षिणमुखाय करालवदनाय नरसिंहाय सकलभूतप्रमथनाय स्वाहा || 18 ||

ॐ - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप | **नमो** - नमस्कार | **भगवते** - भगवान को | **पञ्चवदनाय** - पाँच मुखों वाले (भगवान को) | **दक्षिणमुखाय** - (उन पांच मुखों वाले भगवान के) दक्षिण दिशा में स्थित मुख को | **करालवदनाय** - भयंकर मुख को | **नरसिंहाय** - नरसिंह मुख को | **सकलभूतप्रमथनाय** - सभी दुष्ट प्राणियों का दमन करने वाले को | **स्वाहा** - पूर्ण समर्पण, उनकी कृपा जागृत हो = मैं पंचमुखी भगवान के दक्षिण में स्थित रूप को, भयंकर नरसिंह रूप को, जो समस्त दुष्ट शक्तियों का दमन करते हैं, नमस्कार कर पूर्ण समर्पण करता / करती हूँ | उनकी कृपा जागृत हो | = *I bow in surrender to the South-facing, terrifying Divine Lion aspect of the Five-Faced Lord, Who dominates all hostile beings. Let His grace be activated.*

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय पश्चिममुखाय गरुड़ाननाय सकलविषहराय स्वाहा || 19 ||

ॐ - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप | **नमो** - नमस्कार | **भगवते** - भगवान को | **पञ्चवदनाय** - पाँच मुखों वाले (भगवान को) | **पश्चिममुखाय** - (उन पांच मुखों वाले भगवान के) पश्चिम दिशा में स्थित मुख को | **गरुड़ाननाय** – गरुड़ मुख को | **सकलविषहराय** - सभी विषों का नाश करने वाले को | **स्वाहा** - पूर्ण समर्पण, उनकी कृपा जागृत हो = मैं पंचमुखी भगवान के पश्चिममुखी गरुड़ रूप को, जो सभी विषों का नाश करते हैं, नमस्कार कर पूर्ण समर्पण करता / करती हूँ | उनकी कृपा जागृत हो | = *I bow in surrender to the West-facing Divine Eagle aspect of the Five-Faced Lord, Who removes all poisons. Let His grace be activated.*

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय उत्तरमुखाय आदिवराहाय सकलसंपत्कराय स्वाहा || 20 ||

ॐ - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप | **नमो** - नमस्कार | **भगवते** - भगवान को | **पञ्चवदनाय** - पाँच मुखों वाले (भगवान को) | **उत्तरमुखाय** - (उन पांच मुखों वाले भगवान के) उत्तर दिशा में स्थित मुख को | **आदिवराहाय** - आदि (प्राचीन) वराह मुख को | **सकलसंपत्कराय** - समस्त संपत्ति प्रदान करने वाले को | **स्वाहा** - पूर्ण समर्पण, उनकी कृपा जागृत हो = मैं पंचमुखी भगवान के उत्तर में स्थित प्राचीन वराह रूप को, जो समस्त संपत्तियाँ प्रदान करते हैं, नमस्कार कर पूर्ण समर्पण करता / करती हूँ | उनकी कृपा जागृत हो | = *I bow in surrender to the North-facing primordial Divine Wild Boar aspect of the Five-Faced Lord, Who gives all prosperity. Let His grace be activated.*

ॐ नमो भगवते पञ्चवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवशकराय स्वाहा || 21 ||

ॐ - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप | **नमो** - नमस्कार | **भगवते** - भगवान को | **पञ्चवदनाय** - पाँच मुखों वाले (भगवान को) | **ऊर्ध्वमुखाय** - (उन पांच मुखों वाले भगवान के) ऊपर की ओर स्थित मुख को | **हयग्रीवाय** - दिव्य अश्व मुख को | **सकलजनवशकराय** - सभी लोगों को वश में करने वाले को | **स्वाहा** - पूर्ण समर्पण, उनकी कृपा जागृत हो = मैं पंचमुखी भगवान के ऊर्ध्वमुखी हयग्रीव रूप को, जो (ज्ञान के माध्यम से) सभी लोगों को साथ में लाने की शक्ति देते हैं, नमस्कार कर पूर्ण समर्पण करता / करती हूँ | उनकी कृपा जागृत हो | = *I bow in surrender to the upward-facing Divine Horse aspect of the Five-Faced Lord, who grants alignment with all beings (by the way of Divine Knowledge). Let His grace be activated.*

ऊर्ध्वमुख
ऊपर की ओर
Vertical & Upwards

एक बार और इन पाँचों मुखों को 3D में अनुभव करें | मान के चलें कि आप बीच में हैं | आपका मुख पूर्व की तरफ है | पहले चार मुख आपके चारों ओर हैं | पांचवे अश्व मुख की दिशा ऊपर की ओर है – मानो एक ऊपर भागता हुआ अश्व आपके शरीर से हो के, सिर को पार कर रहा है (चित्र में ये पूरी तरह निकल के नहीं आ रहा है) | पाँचों मुखों की ऐसी 3D कल्पना करते हुए 17 से 21 के ये श्लोक हमें पढ़ने और बोलने हैं |

Once again, imagine these 5 faces in a 3D structure. Visualize yourself at the centre, facing East. First 4 faces are in 4 directions around you. 5th face, Divine Horse face, is vertical and upwards – as if a Horse running upwards crosses your body and then goes past your head (In the image, this is not coming out as perfectly) With this 3D visualization of the 5 faces, these 5 verses need to be chanted from 17 to 21.

ॐ - परम ईश्वर का ध्वनि स्वरूप | **श्रीपञ्चमुखहनुमन्ताय** - श्री पंचमुखी हनुमान को | **आञ्जनेयाय** - माता अंजनी (अंजना नाम भी प्रचलित है) के पुत्र को | **नमो** – नमस्कार | **नमः** - बार बार नमस्कार = *I repeatedly bow to Lord Hanuman in his Five Headed form; He who is the Son of Dear Mother Anjanee (also called as Anjanaa)*

समापन करते हुए कुछ बातें ***(Closing Remarks)***

आंजनेय - ऐसा कहते हैं जन्म के समय यही नाम रखा गया था प्रभु का | उनकी माता अंजनी के नाम पर | दक्षिण भारत में उनका यही नाम आज भी प्रचलित है | उनकी जन्म स्थली अंजनाद्रि पर्वत कहलाती है, जो आज के हमारे कर्नाटक राज्य के हम्पी शहर के पास स्थित है |
"Aañjaneya" is said to have been the Lord's name given at birth. It was given after His mother Añjanee. In South India, this name is still widely used for Him. His birthplace is called Anjanaādri Hill, which is near Hampi in present day Karnataka.

यह स्तोत्र समाप्त करते हुए प्रभु का यह नाम लेना अर्थपूर्ण है | अंजन का अर्थ तो काजल होता है, लेकिन अंजनी शब्द का गहरा अर्थ है | तकनीकी रूप से अंजनी का अर्थ है, वह जो काजल लगाती हैं | लेकिन मेरे अनुसार गहरा अर्थ है - वे जो स्पष्ट देखने में सहायता करती हैं |
Ending this text with this name of the Lord is meaningful. While "añjan" means Kaajal (kohl), the word "Añjanee" has a deeper meaning. Technically it means "She who applies kohl" but in my view, a deeper meaning is - "She who helps one see clearly".

हमारे प्यारे हनुमान जी को स्पष्टता से देखने और समझने में इस स्तोत्र ने मेरी बहुत सहायता की | १०-१२ साल की उम्र से ही मैं उनका नाम सुनता और जपता आ रहा हूं | लेकिन इस पंचमुखी हनुमान कवच को पढ़ने, समझने, याद करने और इस PDF के माध्यम से समझाने की प्रक्रिया में वो मुझे सचमुच स्पष्ट दिखाए दिए | समझ में आये | रामायण के हनुमान स्वरुप में वे रूद्र अवतार कहलाते हैं, ये तो सबको पता है | लेकिन इस कवच पर काम करते हुए मुझे समझ आया की वे मूलतः विष्णु स्वरुप हैं | उनके इस पंचमुखी स्वरुप को पंचमुखी हनुमान न कह के वानरमुखी विष्णु या पंचमुखी विष्णु स्वरुप भी कह दें तो गलत नहीं होगा | श्लोक १५ और १६ में यह साफ़ तरीके से कहा गया है!
This Text has helped me see and understand our Dear Lord Hanuman with great clarity. I have been chanting His name since I was 10 - 12 years old. But while reading, understanding, memorizing, and creating this Panchamukhi Hanuman Kavach PDF, He truly became clearer to me. In the Ramaayana, Hanuman is known as a Rudra incarnation – this we all know. But while working on this Text, I understood that He is fundamentally a Vishnu form. His 5 Faced form can also be called "Lord Vishnu's Five Faced Divine Monkey Form" or simply " 5 faced Vishnu". This aspect is clearly mentioned in verses 15 and 16 !

ये पढ़ के आपके मन में विचार आ रहा होगा, ये कैसे संभव है? हनुमान विष्णु भी हैं, रूद्र भी? जितना मैं समझ पाया हूं - इसका उत्तर यही है कि विष्णु और रूद्र खुद ही एक दूसरे से अलग नहीं हैं ! उन्हें अलग अलग रूपों में देखते हुए, अलग अलग कथाओं में पढ़ते हुए, हम परमेश्वर के इन दो स्वरूपों में ही फर्क करने लग जाते हैं | इस हद तक फर्क करने लग जाते हैं कि कल्पना ही नहीं कर पाते कि ये दोनों एक ही हो सकते हैं, एक ही हैं | लेकिन हमारे ग्रंथों में ये स्पष्ट किया हुआ है - "हरिः ॐ" - हरि ही ॐ अर्थात परमेश्वर हैं | और रूद्र तो ओमकार हैं ही | तो दोनों एक ही तो हुए 😊
Reading this, you must be wondering - how this is possible? Lord Hanuman is Vishnu and Rudra both? As I understand it, Vishnu and Rudra are themselves not different. By seeing and reading about them in different stories and forms, we start treating them as different. But our scriptures clearly indicate their unity when they say "हरिः ॐ" *– Hari is Om (Supreme Lord). And Rudra is Om too! Aren't they one and the same then?* 😊

यह बात तर्क के स्तर पर कहना और इस बात का अंदर बैठना - दो अलग चीज़ें हैं | और यहीं हमारे प्यारे हनुमान जी सहायता करने आ जाते हैं, हमेशा की तरह ! मानो कि सामने आ के कह रहे हों - अगर रूप और स्वरुप के स्तर पर रूद्र और हरि को एक न देख पा रहे हो, तो कोई बात नहीं | मुझे ध्यान से देख लो | मुझे देखते देखते इन दोनों को एक साथ देखना सीख जाओगे 😊
Saying this logically and realizing it internally are two different things. This is where our Dear Lord Hanuman comes to our help, like always! It is as if He comes in front of us and says – "Not being able to see Vishnu and Rudra as One? No worries. Look at me deeply. You will learn to see the two of them as One in due course of time 😊

एक तकनीकी बात "स्वाहा" शब्द पर – "ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा", और बाद के पांच श्लोकों में भी "स्वाहा" शब्द आया हुआ है | आप सोच रहे होंगे, स्वाहा तो यज्ञ हवन करते हुए बोला जाता है - यहाँ पर कैसे आया? यह शब्द पूर्ण समर्पण दिखाते हुए ईश्वर की ऊर्जा और कृपा को जागृत करने के लिए कहा जाता है | अक्सर ये कृपा यज्ञ और हवन के माध्यम से जागृत की जाती है, इसलिए ये शब्द वहाँ बोला जाता है | लेकिन इस स्तोत्र में मंत्र या श्लोक पढ़ के स्वाहा बोलना कृपा जागृत करने के लिए काफी है - यज्ञ या हवन की आवश्यकता नहीं है |
A technical note about the word "Swaahaa": it appears in "ॐ हरिमर्कटाय स्वाहा" and in the following five verses as well. Though this word is usually said during a fire ritual, it conveys complete surrender and invokes divine grace. In this text, chanting the mantra or the verse with "Swaahaa" is enough to awaken that grace - fire ritual not necessary.

स्तोत्र के अंतिम दो शब्द आगे...

Final 2 words of the Text on the next page…

हरिः ॐ

हरि और रूद्र एक ही हैं - परमेश्वर को देखने के 2 तरीके

Hari and Rudra are One! 2 ways to see the same Supreme Lord

और इन्हें साथ लाते हैं, हमारे प्यारे श्री हनुमान !

And the One Who brings them together – Our Beloved Lord Hanuman